॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अगस्त, 2015 वर्ष 18, अंक 8 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2072 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 20

देश की आजादी का परवाना
स्वामी दयानन्द सरस्वती

❒ डॉ. देवराज गुप्ता

6 फुट 4 इंज कद, सुडोल बदन, गोल गोरा सुन्दर चेहरा, नाक लम्बी, गहरी आँखे जिधर भी गया अनायास लोगो की भीड़ उस ओर आकर्षित हुई-अद्भुत वक्ता, वाणी में ओज और आवाज पांच हजार लोगों की भीड़ भी बिना माईक के उस को सुन सकती थी और वह लोग जो उसकी सभाओं में शोर मचाने, उसको हूट करने के लिए जाते थे वही लोग इतने प्रभावित होते थे कि करतल ध्वनि से उसका स्वागत करते थे। दयानन्द वह हस्ती थी जिसने बड़ी दृढ़ता से उन पाखंडो की पोल खोली जो धर्म के नाम पर और वेदों के नाम पर देश को भिन्न-भिन्न जातियों में बांट रहे थे। यह दयानन्द था जिसने उस समय के पण्डितों जो अपने को वेदों का विद्वान कहते थे को पूछा कि कहां लिखा है वेदों में जात-पात, छूआछूत, बालविवाह, आजीवन विधवा और सती होना।

उसी समय में धर्मान्ध पण्डित अपने स्वार्थो के लिए दयानन्द के घोर विरोधी हुए परन्तु उस ऋषि की आकाट्य युक्तियों के सम्मुख टिक न सके और यह दयानन्द था जिस ने एक सधे हुए Architect की भान्ति एक नये भारत का निर्माण आरम्भ किया और उस समय के सुधारक राम मोहन राय और केशव चन्द्र सेन जो पश्चिमी सभ्यता की नींव पर नव निर्माण कर रहे थे, उस से हट कर दयानन्द ने भारत की प्राचीन सभ्यता और वैदिक धर्म की नींव बनाकर नव निर्माण प्रारम्भ किया। वेंद इस देश के सदा से धर्म, संस्कृति और सभ्यता का स्रोत रहे है और इसी को ध्यान में रखते हुए दयानन्द ने आर्य समाज को तीसरा नियम दिया।

''वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है''

पाण्डीचरी के श्री अरविन्द्र ने लिखा दयानन्द भारत माता का वह सपूत था जिसने इस देश की खोई हूई पूंजी वेदों को न केवल ढूंढ निकाला अपितु उसको जनमानस को अर्पित कर दिया है। दयानन्द वह व्यक्ति था जिसने भारत के नवनिर्माण का बीड़ा उठाया और उसने महसूस किया कि अकेले इतना बड़ा कार्य सम्भव नहीं तो एक ऐसी सुदृढ़ संस्था की स्थापना की जिसका नाम ''आर्य समाज'' रखा और आर्य समाज की सदस्यता हर उस व्यक्ति के लिए खोल दी जो आर्य समाज के दस नियमों का पालन करे फिर चाहे वह किसी भी जाति अथवा धर्म को मानने वाला हो। दयानन्द पहला भारतीय था जिसने अपने देशवासियों से बड़े खोज पूर्ण प्रश्न पूछे यथा तुम अपने को दूसरों से विशेष कर गोरों से घटिया क्यों समझते हो।

- तुम्हें अपने आप को भारतीय कहने में क्यों शर्म आती है।
- तुमे अपना राष्ट्रीय गौरव क्यों भुला दिया।
- तुम दुनिया में अपना सिर उठाकर क्यों नहीं चल सकते।

दयानन्द ने कहा पारस पत्थर को तो मैं नहीं जानता परन्तु यह देश ही वह पारस पत्थर है जिसने विदेशियों के लोहे को सोने में तब्दील कर दिया तुम्हारा सोना वे लूट ले गए। अपने प्राचीन को देखा तुम कितने महान और शक्तिशाली थे कोई समय था जब सारा संसार शिक्षा और विज्ञान के लिए हमारी ओर देखता था सारी शिक्षा यही से मिस्त्र और यूनान में गई और फिर यूरोप में पहुंची। दयानन्द ने अपनी बात को बल देने के लिए विदेशी विद्वानों को Quote भी किया जेकोलीट एक फ्रांसीसी विद्वान "India is the fountain head of all knowledge" और अपनी पुस्तक "The Bible in India" में जेकोलीट प्रार्थना करता है।

" O God make may country as advanced in knowledge as India was in Olden days"

और दयानन्द कहता है जो जगत गुरु थे और जिसका संसार में चक्रवर्ती राज था आज उसकी सन्तानों का ऐसा दुर्भाग्य है कि विदेशियों के पांव तले कुचले जा रहे है।

दयानन्द ने अपने देश की अर्थव्यवस्था के नवनिर्माण पर बल देते हुए कहा ''देखो अंग्रेजो को इस देश में आए हुए 100 वर्ष से अधिक हो गये है परन्तु वे अपने ही देश के बने हुए कपड़े और जूते पहनते हैं अपने दफ्तरों में सिर्फ अंग्रेजी जूता पहनने (शेष पृष्ठ 18 पर)

पाठकों से विनम्र निवेदन
पृष्ठ 18 पर अवश्य पढ़ें।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डी.ए.वी. द्वारा नैतिक मूल्यों पर कार्यशाला

अध्यापकों ने वैदिक मूल्यों हेतु समर्पित संकल्प लिया

इंजन की गति ही रेल की गति होती है

प्रधानाचार्य का आचरण विद्यार्थियों/अध्यापकों को प्रभावित करता है- डॉ. पूनम सूरी

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, थर्मल पावर, पानीपत में आयोजित 'शिक्षा में नैतिक-मूल्यों का अवलंबन' विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के अध्यक्ष डॉ. पूनम सूरी ने अध्यापकों का आह्वान किया कि वे अपने आचरण को उन्नत करते हुए विद्यार्थियों में नैतिक-मूल्यों का आधान करें। वैदिक सिद्धान्तों का हवाला देते हुए श्री सूरी ने शिक्षा के उद्देश्यों और शिक्षा-प्राप्ति के साधनों पर व्यापक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विद्यालय में मिले संस्कार ही व्यक्ति के जीवन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। विद्यालय माँ के बाद व्यक्ति के जीवन को बनाने वाली कार्यशाला है। लगभग एक घण्टे तक अपने मधुर और हृदयग्राही उद्बोधन से मुख्य-अतिथि ने बारह विद्यालयों से आए तीन सौ से अधिक शिक्षकों को भाव-विभोर कर दिया। डॉ. पूनम सूरी ने डी.ए.वी. विद्यालयों में कार्यरत् प्राचार्यो और शिक्षकों के लिए इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन पर बल देते हुए यह घोषणा की कि एक सुनिश्चित प्रारूप के आधार पर देश-भर में फैले डी.ए.वी. विद्यालयों

में इस प्रकार की कार्यशालाएं करवाई जाएंगी। मान्य प्रधान जी के साथ उनकी सहधर्मिणी श्रीमती मणि सूरीजी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के महामन्त्री श्री आर.एस. शर्माजी ने की। उन्होंने पूनम सूरी जी के इस पवित्र संकल्प की प्रशंसा की ओर आशा प्रकट की कि इस आयोजन के पश्चात् डी.ए.वी. विद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों के जीवन में महत्वूपर्ण बदलाव आएगा।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी ने इसका उद्देश्य स्पष्ट किया और कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से अध्यापकों और प्राचार्यो को जीवन की सच्चाई, कठिनाई और उसमें समाधान का ज्ञान कराना है। श्री सत्यपाल आर्य, सचिव डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति एवं सहमन्त्री आर्य प्रतिनिधि प्रादेशिक सभा ने भी अध्यापको को संबोधित किया।

कार्यशाला में विशेषज्ञों के रूप में वेद, दर्शन, वैदिक आचार-संहिता और आयुर्वेद पद्धति के विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित किया गया था।

गुरुकुल कुरूक्षेत्र से आए डॉ. देवव्रत आचार्य ने 'स्वास्थ्य ही जीवन है' विषय पर अपने अनुभव से भरे हुए प्रेरक व्याख्यान से

(शेष पृष्ठ 19 पर)

सम्पादक जी हुए 60 के

दिनांक 31.07.1955 को पूर्ण रूप से आर्य समाज को समर्पित परिवार में जन्म हुआ, दादी पौराणिक परिपेक्ष्य से थी लेकिन पिता जी आर्य वैदिक मान्यताओं से प्रेरित थे और आर्य वीर दल रावलपिण्डी के संचालक रहे। गुरुकुल रावल के संस्थापक स्वामी आत्मानन्द जी महाराज से प्रभावित थे। विभाजन के उपरान्त 1949-50 में आर्य समाज बस्ती हरफूल सिंह, सदर बाजार, दिल्ली में आर्य समाज की स्थापना आपके पिता श्री रामनाथ सहगल जी के द्वारा हुई और सम्पादक जी की प्रवृत्ति जन्म से ही आर्य समाज की ओर हुई। 1956 में प्रथम जन्म दिवस इसी आर्य समाज में आयोजित हुआ। पंडित हरिशरण जी जो कि पहाड़गंज में रहते थे जिन्होंने कालान्तर में ऋग्वेद का भाष्य सरल भाषा में किया और दिल्ली की पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या जी के बड़े देवर थे। उनके द्वारा नामकरण एवं जन्मदिवस संस्कार सम्पन्न हुआ। स्वामी आत्मानन्द जी महाराज भी इस उत्सव में उपस्थित थे। आर्य समाज के प्रधान लाला सीताराम जी (पेन्ट वाले) हुआ करते थे और पिता जी मन्त्री। आर्य समाज की छत नहीं थी केवल चार दीवारी होती थी। वहीं से बाल्यकाल में जूते व्यवस्थित रूप से रखने का दायित्व दिया गया। कालान्तर में सेवक ना होने के कारण यज्ञ की व्यवस्था पर आसन, यज्ञ पात्र आदि रखने और बाद में साफ कर व्यवस्थित करके रखना जिसमें अजय जी की बड़ी बहन मंजू भी साथ होती थी जो वर्तमान में आर्य स्त्री समाज, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली में कर्मठ कार्यकत्री है। यहां से आर्य समाज से जुड़ने कि प्रेरणा पिता जी द्वारा दी गई।

दिल्ली पब्लिक स्कूल मथुरा रोड, दिल्ली में प्रवेश कराया गया। (यह एक अंग्रेजी माध्यमिक स्कूल था)। परिवार का हिन्दी परिपेक्ष्य होने के कारण वहां से कक्षा तीन के बाद दयानन्द मॉडल स्कूल मन्दिर मार्ग, दिल्ली में कक्षा पाँच तक शिक्षा प्राप्त की क्योंकि स्कूल इससे आगे केवल छात्राओं हेतु था। इस कारण निकटवर्तीय हरकोट बटलर स्कूल में कक्षा आठ तक पढ़ाई की। तत्पश्चात् डी.ए.वी. सेकेण्डरी स्कूल, चित्रगुप्ता रोड, पहाड़गंज, नई दिल्ली से कक्षा 11 तक पढ़ाई की और तत्पश्चात् पी.जी. डी.ए.वी. कॉलेज से स्नातक की शिक्षा प्राप्त ग्रहण की। पिता जी व्यापार में डालना चाहते थे। इस कारण मुम्बई स्थित हमारे चाचाओं के साथ लगा दिया। इसी दौरान वर्ष 1978 में विवाह सम्पन्न हुआ और पुत्र अभिषेक का जन्म भी हुआ, लेकिन व्यापार रास ना आने पर पुनः दिल्ली वापस आए। पंजाब एण्ड सिंध बैंक में वर्ष 1979 में एक लिपिक के रूप में नौकरी प्रारम्भ की। बैंक निजी था जो कालान्तर में सरकारी हुआ और अब 35 वर्ष की नौकरी के उपरान्त प्रबन्धक के रूप में सेवानिवृत्त माह जुलाई 2015 को हो गये हैं:

सिक्के का दूसरा पहलू:- बाल्यकाल से ही आर्य समाज कि गतिविधियों का केन्द्र रहा था घर। दादी हिन्दी आन्दोलन में जेल में रही। बुआ, हैदराबाद आन्दोलन में सक्रिय रही। पिता जी पूर्ण रूप से दिल्ली की आर्य समाज गतिविधियों से जुड़े हुये थे। इस कारण कक्षा आठ में प्रथम आर्य वीर दल का शिविर गुड़गांव में श्री रामचन्द्र आर्य जी के संयोजन में सम्मिलित हुए। सभी प्रकार से लाठी, व्यायाम, योग आसन आदि सीखे। परिवार से पहली बार अलग हुए थे। वहां आवश्यकता पड़ने पर प्रथम बार सूई में धागा कैसे डालना है सीखा। इसी अवसर पर ब्र. श्यामराव (वर्तमान में स्वामी अग्निवेश) मुख्य अतिथि थे। वहीं से उनके साथ हो लिये। तब स्वामी जी आर्य समाज (अनारकली) नई दिल्ली में रहा करते थे और वहीं से राजधर्म पत्रिका का प्रकाशन होता था। सम्पादक जी कक्षा 8 में पड़ते थे और डाक द्वारा पत्रिका भेजने कि व्यवस्था दी गई क्योंकि विद्यालय आर्य समाज से नजदीक था। विद्यालय के उपरान्त वही रहने लगे। व्यायामशाला भी थी। खान पान बिना नमक के यह दो वर्ष तक चला। माता जी को चिन्ता हुई कहीं आप भी इनकी टोली में ना हो जाए एक पुत्र और वह भी ब्रह्मचारी इसलिए वहां जाना छुड़वा दिया।

अब तक कॉलेज में पहुंच चुके थे और वाणिज्य की पढ़ाई चल रही थी। प्रधानाचार्य श्री चोपड़ा जी हुआ करते थे और बाद में अन्तिम वर्ष में प्रि. मोहन लाल जी (वर्तमान में उपप्रधान डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति), विद्यार्थी परिषद से चुनाव भी लड़ा सफल नहीं हुआ लेकिन विद्यार्थी आन्दोलन से जुड़ा रहा।

इसके उपरान्त मुम्बई जाने पर सभी गतिविधियाँ समाप्त हो गई थी। यही कारण था कि व्यापार में दिल नहीं लगा। सरकारी नौकरी में फिर बैंक कर्मचारी संघ से जुड़े और दिल्ली प्रदेश बैंक कर्मचारी संघ के कोषाध्यक्ष भी रहे। कर्मचारी संघ का कार्य करते हुए बैंक से 9 महीने तक निलंबित रहे। पुनः बिना शर्त वापस लिया गया। बड़ा संघर्षमय जीवन रहा, इसी काल में केन्द्रीय युवक परिषद से जुड़ा और कई वर्ष तक कार्यकारी प्रधान भी रहे। कॉलेज के दिनों से ही डी.ए.वी. की गतिविधियों में लिप्त रहे और बाद में पूर्ण रूप से पिताजी के बैंक से सेवानिवृत होने के उपरान्त पूर्ण रूप से डी.ए.वी. को समर्पित रहे। एक सक्रिय युवक के नाते महात्मा हंसराज दिवस को डी.ए.वी. स्कूल, चित्रगुप्ता रोड के मैदान से तालकटोरा स्टेडियम से आयोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डी.ए.वी. शताब्दी समारोह में, कई ऐतिहासिक आयोजनों में, मुख्य टीम के सक्रिय सदस्य के रूप में सेवाये दी। श्री सूरजभान जी से लेकर स्व. जी.पी. चोपड़ा जी और अब श्री पूनम सूरी जी के साथ सेवा कार्य में निरन्तर सक्रिय हैं। वर्ष 1984 से टंकारा जन्म भूमि से जुड़े है और निरन्तर आज तक सेवाये दे रहे हैं। टंकारा समाचार का प्रारम्भ और इसकी प्रगति एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। बहुत कुछ सीखा सम्पादक का दायित्व संभालते हुए, स्वाध्याय की रूचि इसी काल में हुई। आज लगभग 2000 बड़ी-छोटी पुस्तकों की एक लाइब्रेरी घर पर है और यह कार्य निरन्तर चलाते चलाते आज सम्पादक जी 60 वर्ष होने जा रहे हैं। टंकारा जन्मभूमि पर हुए ऐतिहासिक विकास में आप पिता श्री रामनाथ सहगल जी के साथ पूर्ण सहयोग आज तक निरन्तर दे रहे हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आपकी स्वस्थ दीर्घायु हो और आप नई ऊर्जा के साथ निरन्तर इसी प्रकार आर्य समाज एवम् दयानन्द के बताए मार्ग पर चलते हुए सेवा कार्य करते रहें।

– अतिथि सम्पादक **श्री विनय आर्य**, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

(कुछ पहलू जीवन के स्थान अभाव के कारण रह गये हैं, वह फिर कभी)

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी,
जिन्दगी दिए की बाती की तरह हो तेरी
दूर दुनियां का तेरे दम से अन्धेरा हो जाए
हर जगह तेरे चमकने से उजाला हो जाए
जिस तरह फूल से होती है चमन में खूशबू

राष्ट्रीय पर्व बनाम आर्य समाज

❐ नरसिंह सोलंकी

हम 15 अगस्त सन् 1947 से हर साल भारतीय स्वतन्त्रता दिवस एवं 26 जनवरी सन् 1950 से भारतीय संविधान लागू होने का गणतन्त्र दिवस मनाते आ रहे हैं। 15 अगस्त को लाल किले पर प्रधान मन्त्री द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया जाता है और राष्ट्र को संबोधन देते हैं, जिसमें भावी नीतियों की झलक दिखलाई पड़ती है। 26 जनवरी को दिल्ली के राजपथ पर राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। जिसमें देश विदेश के मेहमान पदाधिकारी, नेता, गणमान्य लोग व आम जनता भी शरीक होती है। कार्यक्रम में मिलिट्री परेड, घातक हथियार प्रदर्शन, प्रदेशों की सांस्कृतिक झांकियें वीर बालकों की सवारी मेडल वितरण एवं लड़ाकू विमानों आदि का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जाना रहा है।

स्थानीय स्तर पर भी ये दोनों कार्यक्रम प्रदेश व जिलास्तर एवं सरकारी कार्यालयों व सरकारी एवं निजी विद्यालायों में बड़े उत्साह के साथ सरकारी आदेशानुसार मनाये जाने है। इनाम प्रशस्ति पत्र व मिठाइयों भी खूब बांटी जाती है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि जनता जनार्दन ने ये पर्व अपने स्तर पर स्वीकार नहीं किये हैं। कितना अच्छा होता यदि भारत का हर नागरिक अपने घर, संस्थान में तिरंगा झंडा फहराता, राष्ट्रीय गान गाता व मिठाई बांटता। कुछ लोग तो यह भी मानते है कि तिरंगा झंडा तो कांग्रेस का है, इससे हमें क्या लेना देना, लेकिन यह तो स्पष्ट है कि तिरंगा झंडा ऊपर से केसरिया बहादुरी का, नीचे हरा हरियाली खेती का एवं बीच में सफेद शान्ति का प्रतीक है, जिसके बीच में अशोक चक्र की 24 पंखुडियों होती है व कुल साइज 1x1.5 का अनुपात रहता है। कांग्रेस के झंडे तिरंगे के बीच में हाथ के पंजे का निशान है। अलग-अलग राजनैतिक दलों के उनके अलग-अलग प्रकार के झंडे है, वैसे ही धार्मिक पंथो के भी तरह-तरह के झंडे हैं। राष्ट्रीय ध्वज के अलावा सभी प्रकार के झंडे चोबीसो घंटे लहराते रहते हैं। जहां तक राष्ट्रीय पर्व एवं राष्ट्रीय ध्वज का प्रश्न है वहां पार्टी अपना झण्डा नहीं लगाकर केवल राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा ही फहरायेगी। वह भी सुबह से शाम सूर्यास्त तक ही, चाहे न्यायालय हो अथवा प्रशासनीय भवन।

हमारे आर्य समाज एवं उच्च संगठनों से राष्ट्रीय पर्व पर तिरंगा ध्वह फहराने का रिवाज नहीं है। हां अगर वहाँ किसी ने पर्व मना भी लिया तो उसका उल्लेख सामने नहीं आता। हमने केवल ओ३म् का भगवा झंडा ही मान रखा है। कहने को तो हम बड़े गर्व से कहते हैं कि भारत की स्वतन्त्रता संग्राम में 90 प्रतिशत लोग जो शहीद हुए व यातनाएं सही, वो आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित थे। हमारे पूर्वजों ने स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था तो उसका प्रतिफल राष्ट्रीय पर्व मनाने में पीछे क्यों रहें। हम भारतवासी जैसे होली, दीवाली आदि पर्व बड़े उत्साह से मनाते हैं, वैसे ही राष्ट्रीय पर्व क्यों नहीं मनाते? क्या हममें किसी प्रकार की कोई राष्ट्रीयता की कमी तो नहीं है? हमें इस विषय में गंभीरता से सोच विचार की आवश्यकता है।

मैं (लेखक) नौकरी में अथवा सेवा निवृत्ति के बाद में भी जहां कहीं पर रहा उपरोक्त दोनों राष्ट्रीय पर्व मनाता आ रहा हूं। मैंने प्रयत्न करके पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री का प्रवचन कार्यक्रम 15 अगस्त को भी सरस्वती बालवीणा भारती सी.से. स्कूल, सिरोला बेरा, सरसागर जोधपुर में रखा था, जो अत्यंत ही प्रभावशाली रहा, लोगों ने खूब सराहा, जिसकी कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध है। इसी प्रकार 15 अगस्त 2013 को भी पं. राम निवास गुणग्राहक का प्रवचन कार्यक्रम इसी स्कूल में रखा जो बड़ा प्रशंसनीय रहा (यह कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध है)। इससे पहिले आर्य समाज सूरसागर एवं राजकीय बालिका सी.से. स्कूल सरसागर के प्रांगण में झंडारोहण कर प्रवचन दिया गया।

अब इसी माह में यह पर्व 15 अगस्त का सामने हैं। हमें प्रयत्न करके हर आर्य समाज, आर्यवीर दल शाखा एवं उच्च स्तरीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में राष्ट्रीय पर्व मनाने की शुरुआत करनी चाहिए।

– मन्त्री आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर, मो. 9413288979

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

www.tankara.com पर उपलब्ध है

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि ***श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001*** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गीता की प्रासंगिकता आधुनिक परिवेश में

❐ डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

गीता भारतीय चिंतन और धर्म का निचोड़ है। वह इस देश की विविध आध्यात्मिक विचारधाराओं के समन्वय की चरम सिद्धि है। ज्ञान-भक्ति और कर्मयोगरूपी त्रिवेणी में प्रायः सभी विद्वानों शंकर, रामानुज, मध्व वल्लभ से लेकर कर्मयोगी तिलक, अरविन्द गांधी तक सभी ने डुबकियां लगाई और अपने-अपने तरीके से इससे हृदय का प्रसाद पाया है तभी तो महामना श्रीकृष्ण आर्य धर्म के जाति में एकता और सबके लिए वंदनीय बन गए हैं।

गीता में वेदों का कर्मयोग, उपनिषदों का आत्मवाद् सांख्य का पुरुष, प्रकृतिवाद, योग की साधना और पुराणों में प्रवाहित भक्ति रसधारा का मानो सारभाग, निचोड़कर रख दिया गया है। जिस प्रकार ग्वाले गायों का दोहन करके उनके दूध को जनता तक पहुंचाते हैं और उन्हें लाभान्वित करते हैं इसी प्रकार कृष्ण ने उपनिषद् वाड्मय के सार को जन-जन तक पहुंचाने के लक्ष्य से अर्जुन से कहा और उसे जीवन के सत्य से परिचित कराया।

गीता के रूप में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने जो महामन्त्र हमें दिया है, वह एक स्थायी अमूल्य निधि है। इस अमूल्य निधि में व्यक्ति, जाति और राष्ट्र सभी की मुक्ति की कुंजी छिपी है। 'गागर में सागर' जैसे इस ग्रन्थ में मानवजाति का यथार्थस्वरूप, उसके वास्तविक लक्ष्य तथा आवश्यक कर्तव्यों की और कैसे बढ़ा जा सकता है इसकी सरल एवं सुबोध कारका प्रस्तुत की गई है। यही कारण है कि समस्त भारतीय वाड्मय के बीच सात सौ श्लोकों की यह छोटी सी रचना विगत कई शताब्दियों से ही एक सिंहासन पर आसीन है। गीता हमें कर्त्तव्य का बोध कराती हैं जिम्मेदारियों से भागना नहीं डटकर मुकाबला करते रहना, दुःख, संताप, निराशा, हताश से ऊपर उठकर प्रसन्नता की ओर चलने का नाम गीता है। इसलिए प्रथम अध्याय का नामकरण विषाद-योग कहा गया है।

आज हर व्यक्ति अभिनिवेश नामक क्लेश (मृत्यु) से घबराता है। चाहता है कि मैं कभी मरूं नहीं। इस दुःख से श्रीकृष्ण सावधान कराते हैं न केवल अर्जुन को अपितु उसके माध्यम से सम्पूर्ण मानवजाति को। आत्मतत्व का कितना सरल, सुबोध, मार्मिक चिंतन का चित्रण सहज्ञता से किया गया है।

सांख्ययोग के अनुसार अजन्मा, अविनश्वर आत्मा की नित्यता एवं इन्द्रियों और विषयों के संयोग से अपने क्षण-भंगुर सुख-दुःख की अनित्यता का विधिवत उपदेश श्रीकृष्ण प्रदान करते हैं।

आज संपूर्ण विश्वमानवजाति में एक हाहाकार मचा हुआ हैं। हर आदमी की अधिकाधिक पाने की तमन्ना, स्वार्थपूर्ति, विषमताएं निरन्तर बढ़ती ही जा रही हैं। यदि उसके अनुकूल उसे प्राप्त होता हैं तो ठीक अन्यथा न मेरा भला न तेरा। सब जगह अशांति का साम्राज्य प्रबल वेग से उपर सबका ध्यान दिलाना चाहते हैं। सुख-दुःख में हानि-लाभ में, जय-पराजय की भावना में समानता का अनुकूलता का व्यवहार बनाये रखो। जीवन में संतुलन बनाये रखें। डगमगाये नहीं।

दुनियां में सदा से ही दो मार्ग चलते आ रहे हैं। श्रेय प्रेय प्रवृत्ति-निवृत्रि, प्रकृतिवादी दृष्टि अध्यात्मवादी दृष्टि श्री कृष्ण ने मानव समाज की हर समस्या का हल करने का एक बीज मन्त्र दिया है वह है निष्काम कर्म का। निष्काम का अर्थ निष्कर्मण्यता नहीं अपितु त्याग भाव, समर्पण भावना से निष्ठा श्रद्धापूर्वक अपने-अपने कर्तव्य में जुटे रहना। कर्म के सम्बन्ध में निष्काम कर्म का सिद्धान्त श्री कृष्ण की सम्पूर्ण मानव समाज को अभूतपूर्व देन है, यह कर्म करने की श्री कृष्ण द्वारा खोज की गई टैक्नीक हैं इसके दो भाग हैं (क) कर्म में स्वतन्त्रता (ख) फल में परतन्त्रता। कर्म करें परन्तु उसमें मनचाहा अधिकार न समझें। कर्म करें आसक्ति को छोड़कर। कर्म की आसक्ति मन में लाकर कर्म करें। मोह, ममता और उस कर्म के साथ कामनाएं जुड़ गई तो वे ही कामनाएं दुःख का कारण बन जाती है। इसलिए कृष्ण कहते हैं-आसक्ति को छोड़ते हुए कर्म करें। इसलिए कृष्ण सबको योग युक्त होने का संदेश देते हैं। अर्जुन तुम योगी बनो और यह भी समझाते हैं कि योग है क्या? समत्वं योग उच्चते। सबमें समभाव रखना यही योग है, वैर विरोध, ईर्ष्या, द्वेष, आलोचना नहीं।

क्या अनासक्त भाव से कर्म किया जा सकता है? हां, विचार करके देखें तो इतिहास में बहुत से उदाहरण देखने को मिल सकते हैं। श्रीरामचन्द्र को राज्याभिषेक के लिए कहा गया या फिर चौदह वर्ष वनवास के लिए कहा गया। इन दोनों अवस्थाओं में उनका चिन्तन एक समान रहा, इसे कहते है अनासक्त भाव।

आठूतस्थाभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽत्याकारविभ्रमः।

निष्काम का विपरीत है सकाम कर्म। मनुष्य में अधिकाधिक प्राप्त करने की तीव्र इच्छा का बना रहना। सकाम कर्म से मनुष्य पतन की और लुढ़कने लगता है, निष्काम कर्म से पहाड़ की ऊँचाई पर बढ़ने लगता है। यह गीता की स्थापना है- सकामता से पतन का क्रम प्रारम्भ होने लगता है जो प्रत्येक व्यक्ति के मन की यात्रा के 8 पड़ावों का वर्णन किया गया है जो संसार के विषयों के ध्यान से शुरु होते हैं और नाश से समाप्त होते हैं। वे 8 पड़ाव हैं-ध्यान, संग, काम, क्रोध, संमोह, स्मृति, विभ्रम बुद्धिनाश तथा सर्वनाश इनका वर्णन सटीक मनोवैज्ञानिक रीति से श्रीकृष्ण इस प्रकार प्रतिपादित करते हैं-

ध्यायतो विषयान्पुंसः बुद्धिनाशात् प्रणश्यति। इस प्रकार सकामता से पतन का वर्णन करने के बाद गीताकार ने निष्कामता से उत्थान का मनोवैज्ञानिक वर्णन भी किया गया है जो इस प्रकार है-

रागद्वेष वियुक्वतैस्तु प्रसादमधिगच्छति।
प्रसादे सर्व दुखानाम् बुद्धि पर्यवतिष्ठते।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि गीता का सारा दृष्टिकोण कामना का, आसक्ति का, वासना का नाश करना है। गीता का दृष्टिकोण यह है कि कामनाएं तथा वासनाएं भोगने से मिटती नहीं। आसक्ति को तोड़ो। कर्म करें परन्तु आसक्ति मन में न बनाये रखें। निष्काम भावना से यज्ञमय परोपकार की भावना से, इदन्नमम की भावना मन में रखते हुए कर्म करने की भावना बंधन में नहीं डालती। इस तरह कर्मयोग का विस्तृत वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण यह कहना चाहते हैं कि कर्मयोग का आचरण ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति कैसे संभव है इस बात का भी कृष्ण उल्लेख करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग स्वभाव, उसके गुण उसके कर्मो को ध्यान में रखकर चातुर्वर्ण्य का

उल्लेख गीता में प्राप्त होता है। प्रत्येक व्यक्ति को कर्मयोगी, ज्ञानयोगी होने के साथ-साथ त्यागी भी होना चाहिए। जो भी भीतर और बाहर से निर्मल हो जाता है ऐसा व्यक्ति ही संन्यासी कहलाने का अधिकारी हो सकता है। कर्मयोग का आचरण ज्ञानपूर्वक होना चाहिए।

किसी भी देश का, समाज का कल्याण तभी संभव हो सकता है जब प्रत्येक नागरिक सुशिक्षित हो, सभ्य हो, चरित्रवान हो। अपने जीवन का लक्ष्य स्वयं तय करे कि उसे किस दिशा में प्रयत्नशील होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति आपको दीन, हीन, मरा, कुचला, हवा हुआ न समझे अपितु स्वाभिमान उसका जागृत होना चाहिए। ऐसा ही कुछ संकेत श्रीकृष्ण देना चाहते हैं सम्पूर्ण मानव समाज को-उध्दरेत्, आत्मना आत्मानम्......। अंधेरे से उजाले की तरफ, मृत्यु से अमृत की तरफ ज्ञान से अमृतत्व को प्राप्त करें। कोई भी समाज का व्यक्ति, निरक्षर, अनपढ़ न रहें। ज्ञान और विज्ञान से अपने अपको तृप्त करने वाले सब मन जाएं। जितना-जितना अज्ञान में मनुष्य जीता है उतना-उतना ही अशांत रहता है, ज्ञान जैसे-जैसे बढ़ता जाता है, विकास होता जाता है। ऐसा पढ़ा लिखा व्यक्ति सबको अपने समान समझे। किसी को भी छोटा या ऊँच-नीच की भावना कदापि न रखे। प्राणिभाव के प्रति करूणा, दया, प्रेम सबके दु:ख को अपना दु:ख समझे। इस प्रकार प्राणिमात्र के प्रति आत्मवत् व्यवहार करें।

गीता केवल मरणशील व्यक्ति को सुनाने वाली चीज नहीं है। हां जिसका मन मर गया है जो अपने आत्मस्वरूप को भूल गया, जो विषाद ग्रस्त है, ऐसे व्यक्ति को सुनाने के लिए और जिनमें जिन्दगी दौड़ रही है, उनको सही दिशा देने के लिए यह ज्ञान बड़ा ही महत्वूपर्ण है।

ज्ञान, कर्म, भक्ति इन तीनों का समन्वय जीवन में अनिवार्य है। किन्तु इनकी उपयोगिता तभी है जब ये तीनों जीवन में पूर्णत: चरितार्थ हो जाते हैं। जीवन में अध्यात्म व नैतिकता के आवरण से ही वास्तविक क्रांति घटित हो सकती है। केवल बाह्य आडम्बरों से जीवन परिवर्तित होने वाला नहीं है। इसलिए कृष्ण, गीता के कुछ अध्यायों में भक्ति की बात करते हैं। ईश्वर: सर्व भूताना हृद देशोऽर्जुन तिष्ठति। गीता (18. 63)। उस ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहते हैं तो हम सभी एक दूसरे के साथ परस्पर मित्रता, भाईचारा, सृष्टि के कण-कण के साथ स्नेह प्रेम करने वाले बन जाए। गीता का सातवां अध्याय यही प्रेरणा देता है। हर जगह ईश्वर की सत्ता होते हुए भी हम किसी को ऊँचा, किसी को नीचा समझते हैं। गीता कहती है हर जगह भगवान को देखने वाले के लिए जाति का, लिंग का, ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं रहता। भगवान का वास प्राणिभाव में समानरूप से विद्यमान रहता है। राजयोग का अर्थ ही कर्मयोग तथा भक्तियोग का मधुर मिलाना। जिसने कर्म से ध्यान से, भक्ति से, ज्ञान से अपने को भगवान् की सनातन उपासना के मार्ग पर डाल दिया है, उसकी दिव्य। प्रकृति उसकी चेतना की स्थिति क्या होगी। ऐसो भगवत् भक्त की कसौटी क्या होगी। इसके बारे में बहुत ही सुन्दर शैली से गीता के 12वें अध्याय में बतलाते है जो व्यक्ति किसी प्राणी के साथ द्वेष नहीं करता, सबको मित्र समझता है, सबसे दया का व्यवहार करता है, सु:ख, दु:ख में समान व्यवहार करता है, संतोषी है, दृढ़ निश्चयी है, हर्ष, ईर्ष्या, भय, राग, द्वेष इत्यादि शत्रुओं से सदैव दूर रहता है। मान-अपमान, शीत, उष्ण, शत्रु व मित्र के प्रति सम-दृष्टि से देखता है। ऐसा व्यक्ति ही भगवान को प्रिय होता है। यह (भक्ति) उपासना रूप धर्म यदि आचरण में उतर जाए तो जीवन में परिवर्तन आना शुरु हो जायेगा। तब जाकर व्यक्ति-व्यक्ति समाज-समाज तथा देश-देश के बीच टकराव की स्थिति समाप्त हो जायेगी।

आज के इस प्रदूषित वातावरण को स्वस्थ सुन्दर बनाने के लिए गीता में प्रतिपादित सच्चे भक्त की कसौटी पर खरे उतरने की आवश्यकता है। समाज में से हिंसा, बर्बरता, धार्मिक विवादों, जातीय विषमताओं, आर्थिक कु व्यवस्थाओं तथा राजनैतिक आराजकता को समाप्त करने के लिए हम केवल सिद्धान्तों की दुहाई न देकर बदलाव के लिए आज इन सिद्धान्तों को प्रयोग में लाने की अत्यन्त आवश्यकता दिखलाई पड़ती है। केवल आचरण शून्य भक्ति से कुछ बदलाव नहीं दिखाई पड़ सकता है। भारतीय संस्कृति का लक्ष्य है आत्मसाक्षात्कार या भगवत प्राप्ति आज के जगत् का लक्ष्य है भोगवाक्ष अवश्य ही भारतीय संस्कृति में भोग का बहिष्कार नहीं है-अर्थ और काम का तिरस्कार नहीं है, परन्तु वे जीवन के लक्ष्य नहीं है, भोग रहें, पर रहें धर्म के नियममार्ग में। धर्म नियन्त्रित अर्थ-काम भगवत् सेवा में नियुक्त होकर मोक्ष की प्राप्ति के साधन बनते हैं।

भोगवादी असुर मानव क्या सोचता है, करता है तथा उसका परिणाम क्या होता है, उस 16वें अध्याय में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। आज के युग के भोगवादी मानव का यह प्रत्यक्ष चित्र है। परन्तु हमारा वैदिक आदर्श कर्तव्यमय त्याग का था। 'तेन व्यक्तेन भुंजीथा। का वैदिक सिद्धान्त है। आसुरी प्रवृत्तियों को छोड़कर दैनी सम्पति के गुणों का अर्जन करने से ही परिवार, समान, राष्ट्र में शांति कल्याण, एकता, का साम्राज्य स्थापित कर सकते है। किसी प्रकार का भय न होना, स्वध र्म पालन, मन, वाष्णी शरीर से किसी की हिंसा न करना, निछा चुगली न करना, उपरोक्त सभी गुणों की चर्चा इसी अध्याय में प्रदर्शित की गई है। इस प्रकार समस्त मानवजाति के कल्याण के लिए गीताकार ने अनेक उपदेश रत्नों को प्रदान किया है, आत्मतत्व निरूपण, संस्कारयोग, अनासक्त, कर्मयोग स्थितप्रज्ञालक्षण, कर्त्तव्य कर्मो की उपादेयता यज्ञादि कर्मो की आवश्यकता, ज्ञान-महिमा, ध्यानयोग, मन का निग्रह, अव्यक्त अक्षरस्वरूप परमेश्वर का वैभव, शुक्ल और कृष्ण गति, सकाम निष्काम उपासना, निष्काम भगवत् भक्ति की श्रेष्ठता तथा सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा की अनन्त विभूति का वर्णन, प्रकृति-पुरुष, क्षेत्र क्षेत्रज्ञ, सत्व-रज-तम आदि तीनों गुण, संसार-वृक्ष क्षर और अक्षर जीवात्मा का स्वरूप दैवी और आसुरी सम्पदा, श्रद्धा का महत्व, संन्यास और त्याग आदि आदि अनेकानेक विषयों पर गीता के 18 अध्यायों में विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

सुनते हैं कि देव-युग में समुद्र मन्थन के समय अनेक रत्नों के साथ-साथ दुर्लभ अमृत की भी उपलब्धि हुई थी। यह बात कहां तक यथार्थ है, हमें नहीं मालूम। किन्तु इसमें संदेह नहीं कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व इसी कुरुक्षेक्ष के मैदान में इस देश की विविध शक्तियों का जो विलाडेन-मंथन हुआ था। उसके फलस्वरूप अवश्य ही अमृत से भी अधिक मूल्यवान एक वस्तु संसार को मिली थी। यह अनमोल वस्तु अर्जुन को निमित्त बनाकर ''श्रीमद्भगवत् गीता के रूप में मानव जाति को दिया गया जगद् गुरु श्री कृष्ण का सुस्पष्ट है-''दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुरघर इरवीये।'' वे ईश्वर के सच्चे भक्त है। वे हस्तिनापुर जाते हुए मार्ग में रथ रूकवाकर संध्या करते हैं। हस्तिनापुर में कौरव सभा में जाने से पूर्व संध्या और अग्निहोत्र करने के संकेत

(शेष पृष्ठ 18 पर)

श्री कृष्ण का दौत्यकर्मः आदर्श राष्ट्रीय अवदान

❒ ईश्वर दयाल माथुर

यद्यपि महायुद्ध को टालने की प्रक्रिया चल रही थी, फिर भी दोनों पक्षों द्वारा अबाध गति से युद्ध की तैयारिया भी चल रही थी। युद्ध की विभिषिका की कल्पना से दोनों पक्ष चिंतित थे। देवव्रत भीष्म हस्तिनापुर के राजसिंहासन की रक्षा के लिए वचनबद्ध थे अतः अपने ही भतीजों-पाण्डुपुत्रों के विरूद्ध शस्त्र उठाने पर अथाह धर्म संकट उपस्थित था। उनके अपने ही शिष्य, जिन्हें उनके द्वारा धनुर्विद्या और रण कौशल में पारंगत किया गया था, मात्र भूमि के टुकड़े के लिए आपस में लड भिड़कर समाप्त होने पर उतारू थे। भौतिक रूप से वे कौरव सेना नायक थे, तथापि उनकी न्यायपूर्ण मान्यता युधिष्ठिर के विजयी होने के साथ थी। यह स्थापित सत्य था कि दुर्योधन का पक्ष मात्र और दुराग्रह है जो न्याय नहीं है।

सर्वोपरि चिन्ताग्रस्त था तो वह था कुरूराज धृतराष्ट्र का अन्तःकरण। विड़म्बना यही थी कि उनकी बेटे उनके निर्णयों के अनुकूल आचरणकर्ता नहीं थे। अतः वे युद्ध टालने की स्थिति में सक्षम नहीं थे। महासमर में कुरुसन्तानों का नाश निश्चित था राज पाट के लिए युद्ध आहूत था, किन्तु उसके भोगकर्ता और ही बनेगें। अतः उपर्युक्त पृष्ठभूमि पर ही संधि दूतों को भेजे जाने को अपरिहार्य माना गया।

सर्वप्रथम द्रुपद ने धृतराष्ट्र के पास अपना दूत सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजा, किन्तु वह निष्फल ही लौट आया, कारण कि अपने राजसत्ता-लोलुप पुत्र दुर्योधन की हठ के आगे वे विवश थे। दूसरी बार प्रयास कौरव पक्ष की ओर से हुआ। इस प्रयास में महाराज धृतराष्ट्र ने संजय को अपना सन्धिदूत नियुक्त किया। संजय को अधिकृत किया गया कि वह युधिष्ठिर महाराज के पास जाए और उन्हें युद्ध के कुपरिणामों से अवगत कराते हुए युद्ध टालने का ही परामर्श करे। अन्तिम प्रयास के रूप में युधिष्ठिर की ओर से महाराज श्रीकृष्ण दौत्य-धर्म निबाहने कौरव सभा में पहुंचे।

सन्धिदूत के नाते निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका श्रीकृष्ण की ही गानी गई है। युग विधायक श्रीकृष्ण वेदज्ञाता एवं योगानुशासन के परित्राता थे अतएव उनके कथन उप कथन और तर्क जो पाण्डवों और कौरवों को संधि प्रस्ताव की पृष्ठभूमि में दिए गए, अकाट्य और नीति परक थे। यदि इनके आधार पर कौरव पक्ष ने सन्धि करके विद्वता का परिचय दिया होता तो वंशनाश के दुष्प्रभाव से तत्कालीन भारतराष्ट्र मुक्त रहता। असंख्य वीरों का प्राणोत्सर्ग, विद्वानों, नीतिनिपुणों और श्रेष्ठ विद्याओं का लोप न हुआ होता जिनका अभाव होने से भारतराष्ट्र आज तक सन्तप्त है। अतः आवश्यक है कि योगीराज के कथनोंपकथनों पर भी दृष्टि डाली जाए।

धृतराष्ट्र के दूत संजय तो पूर्णतः कुरुपुत्रों के प्रति ही समर्पित थे अतः युक्ति पूर्वक धर्म और अधर्म के लक्षणों की व्याख्या के तले धर्मराज युधिष्ठिर को धन-माया और राजपाट के पचड़ो में न पड़ने की ही सलाह देने लगे। दूत की यह पक्षपात पूर्ण कृत्य नीतिनिपुण श्रीकृष्ण को भला कब सहन होता, उन्होंने तत्काल संजय का मस्तिष्क प्रक्षालन (ब्रेनवाश) इन शब्दों के साथ कर डाला:7

''युधिष्ठिर वेदज्ञाता होते हुए भी पूर्ण क्षत्रिय है। अतएव यह समझ लेना भूल होगी कि उन्हें ज्ञान और कर्म के रहस्यों का भान नहीं। ज्ञान तो मस्तिष्क में होता है और भूख शरीर में। भूख का नाश तभी होगा जब भोजन किया जाये। भोजन की प्राप्ति के लिए कर्म अवश्य करना पड़ेगा। अतः सृष्टि में कर्म ही सर्वोपरि है, केवल मात्र ज्ञान ही नहीं। युधिष्ठिर राजसूययज्ञ भी कर चुके है अतः शास्त्र और एवं शस्त्र का समुचित उपयोग जानते है। तुम्हारे तर्क उन्हें क्षात्रधर्म से डिगा नहीं पाएंगे। तुम्हीं सोच लो शास्त्र क्षत्रिय को क्या आज्ञा देते है, युद्ध वा पलायन?''

कृष्ण ने दल के रूप में हस्तिनापुर प्रस्थान से पहले फिर युधिष्ठिर को राजधर्म याद दिलाया दुर्योधन से संधि हो ही जाएगी। इस दुराशा में अपनी तैयारियों के प्रति असावधान न हो जाना। आजीवन ब्राह्मचर्य भिक्षावृत्ति क्षत्रिय के लिए महापाप है। अतः हे राजन् उचित है कि तुम युद्ध की तैयारियां भी करते हुए अपने क्षात्र धर्म रो विमुख न होना।''

कुरूराज धृतराष्ट्र को जब समाचार मिला कि अब दूत के नाते श्रीकृष्ण संधि प्रस्ताव लेकर आ रहे हैं, तो उन्होंने श्री कृष्ण के ठहरने के लिए सुविध ाओं का प्रबन्ध कर दिया। किन्तु श्री कृष्ण ने इन्हें ठुकराते हुए महात्मा विदुर के यहां ठहरना और साधारण आतिथ्य ही स्वीकार किया। दुर्योधन को जब यह भनक लगी तो वह कृष्ण महाराज के सम्मुख उपस्थित हुआ और उसका आतिथ्य न स्वीकारने का कारण पूछा श्री कृष्ण ने उत्तर दिया कि दूतों के लिए यही आज्ञा है कि जब तक उनका दूतत्व सफल न हो जाए, तब तक राजा की पूजा सुविधा स्वीकार न करें।

रात्रि में महात्मा विदुर और योगीराज में सारगर्भित वार्तालाप हुआ। विदुर के कहने का आशय यही था कि दुर्योधन सहित सारी कौरव सभा स्वार्थ लोलुप और हिंसक हो उठी है। संधि प्रस्ताव मानना तो दूर येनकेन प्रकारेण वह पाण्डव पक्ष, यहां तक कि आपको भी क्षति पहुंचाने से नहीं हिचकेगी। इसलिए उनके समक्ष संधि प्रस्ताव लेकर जाने का कोई औचित्य नहीं। महात्मा विदुर के परामर्श पर श्रीकृष्ण ने अति विनीत भाव हो ये शब्द कहे-''मेरा दृढ़ संकल्प है कि एक प्रयास अवश्य करूँ ताकि दोनों ही पक्ष व्यर्थ ही सृष्टि के प्राण नष्ट न करें। राष्ट्र को और क्षत्रिय को वंशनाश से बचाने की दिशा में अवश्य कुछ करूं। मेरा प्रयास फलीभूत हुआ तो समझूंगा कि मैंने राष्ट्र और समाज के प्रति महान् धर्म का निर्वाह किया। कौरव और पाण्डव दोनों ही मेरे स्नेहभाजक है, अतः श्रेष्ठ है कि इस होने वाले उत्पात को रोकू वे चाहें मानें न मानें।''

अगले दिन कौरव सभा में उनके तर्क इस प्रकार रहे ''हे कुरुराज आपका कुल सारे भूमण्डल का शिरोमणि हैं। शस्त्र-मर्यादा के रक्षक होने के कारण आपके कुल की प्रतिष्ठा हैं इस मर्यादा की रक्षा के लिए पाण्डवों से संधि कर ली जाए और आधा राज्य लौटा दिया जाए। आपस में मेल हो जाने पर निन्दा का कोई प्रश्न ही नहीं, प्रतिष्ठा और भी बढ़ जायेगी। पाण्डवों के भी सहायक बन जाने से आप पर इन्द्र भी कुदृष्टि न डाल पायेगें मैं दोनों का शुभचिंतक हूं। इसलिए राज धर्म के नाम पर दोनों का कल्याण चाहते हुए विनय करता हूं कि आप सन्धि कर ले और कुपरिणामों को टाल दें।''

इन शब्दों के साथ ही योगीराज श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र को सम्राट का सम्बोधन देते हुह मार्मिक-अनुनय इस प्रकार की-''हे कुरूसम्राट आप इन लोगों (कौरव पुत्रों) को सदपरामर्श करें ताकि समस्त प्रजाओं का नाश न हो। युद्ध एक विकृति है और शान्ति प्रकृति। राजा का धर्म प्रकृति में स्थित रहने का है। आप यदि प्रकृति में स्थित होंगे तो समूचा राष्ट्र भावी विनाश से बच जाएगा।''

इस प्रकार अनेक उद्धारणों और नीतिपरक उक्तियों के साथ शान्ति-दूत श्रीकृष्ण ने सन्धि प्रस्ताव रखा और अपना दायित्व निभाया। यह तथ्य है कि होनी तो होकर ही रही, कौरव पक्ष पर सवार अनीति का भूत नहीं उतरा जिसने महाभारत के समर को अपरिहार्य बना दिया।

युद्ध के पश्चात् भविष्य के परिणामों को लक्ष्य करके ही महाराज श्रीकृष्ण ने भारत राष्ट्र रक्षार्थ सुरक्षा कवच की भी स्थापना की। सम्पूर्ण उत्तर भारत पर विजय पताका तो वे फहरा ही चुके थे और चाहते तो मथुरा नगरी को राजधानी बनाए निष्कटिक शेष जीवन व्यतीत कर लेते। उनकी दिव्य दृष्टि ने आंकलन किया कि दक्षिण में सागर की उपस्थिति और उत्तर में हिमालय की उच्चता के पश्चात् राष्ट्र पर यदि संकट उपस्थित हो सकता है तो वह पश्चिम की थल और छिछली जल सीमा से ही। अत: उन्होंने द्वारिका नगरी बसा कर उसको अपनी राजधानी इसलिए बनाया कि थार-सिन्ध की मरूस्थलीय सीमा और कच्छ की खाड़ी की छिछली जल सीमा पर सामरिक दृष्टि बनी रहें। उनकी यह आशंका सहास्त्राब्दियों बाद ही सही, खरी उतरी। सिन्ध और सोमनाथ मन्दिर पर यवन आक्रमणकारी इसी दिशा से प्रविष्ट हुए।

योगीराज के द्वारा प्रस्थापित द्वारिका नगरी का स्मरिक रूप बनाए न रख कर इसे आस्था और अन्ध भक्ति का केन्द्र बना दिया जिसका आतताईयों ने पूरा लाभ उठाया। श्रीकृष्ण के तुल्य प्रतिभाशील, प्रज्ञावान् योगविद्यावारिधि, दूरदर्शी एवं कूटनीतिज्ञ और पारखी अन्यत्र नहीं हुआ। खेद है कि अपनों ने ही उनके 'आप्त' चरित्र को अतिरंजित रासलीलाधारी के रंग में रंग डाला। आज भी निहित स्वार्थों व वैयक्तिक आकांक्षाओं की पूर्ति चाहने वाले कथावाचक रासलीला-चीरहरण लीला उनके चरित्र के साथ जोड़ते हुए चोर जार-शिरोमणि तक की संज्ञा देते है जो श्रीकृष्ण के चरित्र के साथ अन्याय है।

- 157,सन्तोष नगर, न्यूं सांगानेर, रोड, जयपुर-302019

हे प्रभु! हमारी बुद्धि सन्मार्ग पर चला

❒ डॉ. अशोक आर्य

संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है। प्रत्येक प्राणी अपने में ज्ञान का भंडार भरना चाहता है। अच्छा व्यवहार चाहता है। अपना कल्याण चाहता है। यह सब परम पिता परमात्मा के आशीर्वाद से ही संभव है। पिता के इस आशीर्वाद को ही प्राप्त करना मानव जीवन में सब का प्रयास रहता है। इसके लिए सन्मार्ग पर चलना आवश्यक है जो सन्मार्ग पर चलता है, उसे प्रभु का आशीर्वाद अवश्य ही मिलता है। चारों वेद के विभिन्न गायत्री मन्त्र में इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए इस प्रकार कहा गया है:-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ऋ 3.62.10

जो सच्चिदानन्द स्वरूप, संसार के उत्पादक, देव, परमात्मा का सर्वोत्कृष्ट तेज है उसे हम धारण करते हैं। वही परमात्मा हमारी बुद्धि को उत्तम कर्मो में प्रेरित करे।

आस्तिकता तथा बुद्धि की शुद्धता इन दो बातों की आस्तिक होने के लिए आवश्यकता होती है। दोनों की ही सिद्धि गायत्री मन्त्र करता है। गायत्री का अर्थ गया और गाय दिया गया है जिसका भाव है-प्राण। शत-पथ ब्राह्मण में इस प्रकार दिया है।

प्राणा वै गया: (श.ब्रा. 14.8.15.7) गया: प्राणा:, गया: एव गाया: तान त्रायते इति गायत्री। इसमें गाय या प्राणों की रक्षा करने वाले को गायत्री बताया है। यही कारण है कि गायत्री मन्त्र के जप से प्राणशक्ति बढ़ती है। इसके साथ ही गायत्री के जप से शारीरिक व बौद्धिक दुर्बलता भी दूर होती है। इतना ही नहीं गायत्री को सावित्री भी कहा है। सावित्री का सविता अरहत सूर्य या ब्रह्मा से संबंध होने से ही यह सावित्री कहलाया है क्योंकि इस मन्त्र के जप से सौर शक्ति उत्पन्न होती है।

इतने से ही स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति अपने अन्दर बौद्धिक विकास की अभिलाषा रखता है, जो व्यक्ति अपने शरीर को सशक्त रखना चाहता है, जो अपने में सूर्यवत तेजस्वित चाहता है, उसके लिए गायत्री का जप अत्यंत उपयोगी है। बिना गायत्री जप के इस सब में से कुछ भी प्राप्त कर पाना संभव नहीं है।

तैतिरीय ब्राम्हण में तो गायत्री को ब्रह्मम वर्चस भी बताया है। इसका भाव है कि गायत्री ही ब्रह्मतेज है। अत: जो व्यक्ति गायत्री का नियमित जप करता है वह ब्रह्ममतेज को भी पा लेता है। यह ब्रह्मवर्चस ही है, जिससे व्यक्ति संयमी, मनोइग्रही तथा जितेन्द्रिय बनता है। अत: जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने की इच्छा सिंजो रखी है, जो अपने जीवन में संयम को धारण करना चाहता है अथवा जो मनोनिग्रह की कामना रखता है, उसके लिए गायत्री का जाप आवश्यक व उपयोगी है। तभी तो तान्द्य ब्राह्मण में ''वीर्य वै गायत्री'' कहा गया है। यदि हम गायत्री मन्त्र की पंक्तियों को देखते हें तो हमें स्पष्ट दिखाई देता है कि गायत्री के तीन भाग हैं:-(1) महाव्याहृति:- गायत्री में ओ३म् भूर्भव: स्व:। यह प्रथम पंक्ति है। इसे ही इस मन्त्र का प्रारम्भ भाग कहा गया है। इस भाग में परमात्मा के स्वरूप के सम्बन्ध में बताया गया है। मन्त्र का यह भाग बताता है कि हमारा उत्पादक परमात्मा सत, चित और आनन्दस्वरूप है। यह आनन्द ही तो है जिसको प्राप्त करने का प्रयास मानव जीवन भर करता रहता है यह उसका ध्येय है अन्तिम लक्ष्य है। (2) तत से लेकर धीमहि तक के गायत्री खंड को मन्त्र के दूसरे भाग स्वरूप लिया जाता है। इसका भाव है कि जो आनन्द का वर्णन प्रथम भाग में किया है, उस आनन्द को पाने के लिए परमात्मा के तेज को, परमात्मा की ज्योति को ह्रदय में धारण करना होगा। इस ज्योति को जब तक हम अपने ह्रदय में धारण नहीं करते तब तक ज्ञान की शक्ति की उदबुद्ध नहीं होगी, ज्ञान की शक्ति का हमारे अंदर यदि है ही नहीं तो अक्नंद, सुख कैसे होगा। बुद्धि तब ही शुद्ध होती है जब हमें पिता पर पूर्ण विश्वास हो जिसे आस्तिकता कहा गया है, हम आस्तिक हों, ईश विश्वासी हों और ईश की सर्वव्यापकता पर विश्वास रखते हों। इस प्रकार मन्त्र का यह दूसरा भाग आत्मिकता और आत्मिक शक्ति को उत्पन्न करने का साधन है। जब तक हम यह शक्ति उदित नहीं कर लेते तब तक प्रभु का स्नेह नहीं पा सकते। (3) मन्त्र का शेषभाग-धियो. ....ध्यात, इसके तृतीय भाग स्वरूप है। इस भाग में मन्त्र जप का फल बताया गया है। यह भाग हमें बताता है कि पिता को ह्रदय में ध ारण करने से उस प्रभु का प्रकाश बुद्धि को शुद्ध करता है। शुद्ध बुद्धि स्वयं ही उत्तम मार्ग की अनुगामी होने से सन्मार्ग पर चलाती है। बुद्धि कुमार्ग को अकर्त्तव्या पथ को त्याग कर सन्मार्ग या शपथ या कर्त्तव्य पथ पर चलने लगती है। जब बुद्धि सन्मार्ग पर चलाती है तो मानव जीवन सुखों से भर जाता है। अत: सुखों के अभिलाषी प्राणी के लिए आवश्यक है कि वह सन्मार्ग पर चले, जिसे पाने के लिए गायत्री का नियंतर जाप करे। - 104, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी, गाजियाबाद, मो. 09718578068

मैं और मेरा

❐ ओमप्रकाश बजाज

'मैं' और 'मेरा' यह दो शब्द हमारे मन मस्तिष्क पर इतने हावी रहते हैं कि हमारा दिन प्रति दिन का हर कार्यकलाप इनसे प्रभावित ही नहीं बल्कि पूरी तरह नियंत्रित होता है। हमारी सारी सोच इन्हीं पर आधारित होती है। इन्हीं के इर्द गिर्द घूमती है। हम 'मैं' और 'मेरा' से इतर कुछ सोच ही नहीं पाते। कभी भी कहीं भी किसी से भी अपनी साधारण बातचीत मात्र एक प्रयोग के तौर पर टेप कर लीजिए। फिर उसे सुनिये और देखिये कि उस जरा से वार्तालाप में आप ने इन दो शब्दों 'मैं' और 'मेरा' का प्रयोग कितनी बार किया है, विश्वास कीजिये आप स्वयं भी आश्चर्यचकित रह जाएंगे।

'मैं' और 'मेरा' का पाठ हमें घुट्टी में ही पिला दिया जाता है। शैशव से ही हम 'मैं' और 'मेरा' की गरदान सुनते आते हैं और प्रात: से सायं तक पग-पग पर 'मैं' और 'मेरा' का ही प्रयोग होता देखते है। अत: 'मैं' और 'मेरा' हमारे अवचेतन में इतने गहरे तक पैठ जाता है, रच बस जाता है कि फिर जीवन भर चाहते हुए भी इस से छुटकारा नहीं पा पाते।

यह तो कोई कहने की बात ही नहीं है कि निजी जीवन में, परिवार में, समाज में, संसार में अधिकांश कठिनाइयों, परेशानियों, बुराइयों, झगड़ों, मनमुटाव के मूल में यही 'मैं' और 'मेरा' ही होते हैं, यूं हम बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं, त्याग, बलिदान, अपरिग्रह, भाईचारा से विश्वबंधुत्व तक के स्वप्न देखते हैं, ऊंची ऊंची उड़ाने भरते हैं मगर वास्तविकता के धरातल पर उतरते ही पुन: 'मैं' और 'मेरा' की दलदल में रपट जाते हैं, जरा सोच कर देखिए कि यदि 'मैं' और 'मेरा' का भूत हम पर इस कद्र हावी न होता तो कितने झगड़े, फसाद, लड़ाइयां, दुश्मनी, वैरभाव का अस्तित्व ही मिट जाता!

बाहर वालों की बात जाने दीजिये, भाई-भाई में, बहन भाई में, बाप बेटे में मुकदमेबाजी, गाली-गलोच, मारपीट यहां तक कि कत्ल तक होते देखे जाते हैं मात्र इसी 'मैं' और 'मेरा' के चक्कर में, गृहस्थ तो गृहस्थ हैं, दूसरों को बड़े अच्छे अच्छे उपदेश देने वाले साधु महात्माओं को भी कई बार इस 'मैं' और 'मेरा' की फिसलन पर फिसलते देखा जा सकता है। पति-पत्नी में अलगाव के पीछे भी अधिकतर इसी 'मैं' और 'मेरा' की मेहरबानी होती है। कहने को तो वे दो शरीर एक प्राण होते हैं किन्तु 'मैं' से हम और 'मेरा' से हमारा नहीं हो पाते।

सब जानते हैं कि सब कुछ यहीं छूट जाना है, मुट्ठी बांधे आए हैं और हाथ पसारे जाना है, किन्तु 'मैं' और 'मेरा' की जकड़ ऐसी मजबूत है कि वह सारा ज्ञान, समझबूझ, होश भुला देती है। कुछ ही दिन हुए एक वृद्धाश्रम में एक वृद्ध ने दूसरे वृद्ध की हत्या कर दी। भरपूर जीवन जी लेने के बाद, घर परिवार से अलग वृद्धाश्रम में रहते हुए जीवन संध्या की बेला में भी शायद इन बुजुर्गो के दिल-दिमाग से 'मैं' और 'मेरा' विलुप्त नहीं हो पाए।

अपने मन की शान्ति के लिए, अपने चारों ओर सुख और संतोष बांटने के लिए, समाज में भाईचारा लाने के लिए, विश्व-बंधुत्व हेतु सक्रिय योगदान के लिए, इस संसार को कुछ बेहतर बनाने के लिए आवश्यक है कि इस 'मैं' और 'मेरा' से जहां तक बन पड़े छुटकारा पाया जाए, दूसरों के प्रेरित करने से पहले जरूरी है कि हम स्वयं इस पर अमल कर के एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें।

- बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, म.प्र., मो. 9826496975

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

विश्व को आर्य कैसे बनाएं

❐ अरविन्द कुमार मेहता (संकलनकर्ता)

ईश्वराज्ञा पालन के 21 सूत्र

1. अपने 'आर्य' उत्तम गुण, कर्म स्वभावों को बढ़ाकर।
2. वेद और आर्य ग्रन्थों का स्वाध्याय करके।
3. वेद ज्ञान रहित लोगों में प्रचारार्थ प्रतिदिन कुछ घण्टे लगाकर।
4. अपनी आय का एक प्रतिशत प्रचार कार्य में दान देकर।
5. अपनी सन्तानों को वैदिक शिक्षा देकर।
6. अपने मित्रों को वैदिक मार्ग दिखलाकर।
7. अपने घर में हवन सत्संग का आयोजन कर।
8. अपने मित्रों, सहयोगियों में वैदिक साहित्य बांट कर।
9. अपने सन्तानों का यथा समय वैदिक संस्कार करवा कर।
10. अल्प मूल्य पर प्रचार साहित्य बांटकर।
11. अपने सन्तानों को गुरुकुल अथवा आर्य विद्यालायों में पढ़वा कर।
12. वैदिक शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को छात्रवृत्ति देकर।
13. वैदिक शिक्षण संस्थाओं को धन आदि से सहयोग करके।
14. अपनी योग्यतानुसार अशिक्षिताओं और अन्धविश्वासों के मध्य प्रवचन करके।
15. वैदिक सिद्धान्तों पर वाद-विवाद परिचर्चा व संगोष्ठी आयोजित करके।
16. भजन एवं प्रवचन दृश्य श्रव्य कैसेट तैयार कर, बेच कर, भेंट कर।
17. पुस्तक प्रदर्शनी लगवाकर।
18. छोटी-छोटी पुस्तकें लिखकर।
19. दुर्लभ और सस्ते साहित्य छपवा कर।
20. वैदिक पर्वो को पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर विधि पूर्वक मनाकर।
21. स्वयं एक कुशल सदाचारी कर्मचारी, अधिकारी बनकर हम विश्व के प्रत्येक मानव को आर्य बना सकतें हैं।

तत्पश्चात् ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के यर्थाथ स्वरूप की जानकारी देकर **आर्य समाज के नियमों के पालन का दिग्दर्शन** उपरियुक्त तरीकों से कराकर, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज नामक संस्था की स्थापना की उन्होंने अपने स्वानुभव वेदानुकूल प्रमाणों तर्को एवं युक्तियों से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का स्वरूप निम्न प्रकार रखा।

(1) स्तुतिः- जो ईश्वर या किसी दूसरों पदार्थ के गुण, ज्ञान, कथन, श्रवण और सत्य भाषण करना है वह स्तुति कहलाती है।

(2) प्रार्थनाः- अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कार्यो की सिद्धि के लिए परमेश्वर का सहारा लेने को प्रार्थना कहते हैं।

(3) उपासनाः- उपासना का अर्थ समीपस्थ होना आत्मा का परमात्मा से मेल होना।

सुखी होने के दस रास्ते

काम में सदैव व्यस्त रहो। कम से कम बोले।
कभी-कभी न बोलना भी सीखो।
अपनी गलती स्वीकार करना सीखें।
व्यवहारिक बनें। पहले लिखो बाद में दो।
राय सबकी लो, परन्तु निर्णय स्वयं लो।
सबको सम्मान से बुलाओ।
जरूरत न हो तो उसकी खरीदारी न करो।
पहले सोचो फिर बोलो।

दुःखी होने के दस रास्ते

देर से सोना-देर से उठना।
लेने-देन का हिसाब न रखना।
किसी के लिए कुछ न करना।
हमेशा स्वयं के लिए ही सोचना।
स्वयं की बात को ही सत्य बताना।
किसी का भी विश्वास न करना।
बिना कारण झूठ बोलना।
कोई भी काम समय से न करना।
बिना मांगे सलाह देना।
भूतकाल के दुःख को याद करना।

आर्य भवन ट्रस्ट, 29/3, विभव नगर, आगरा-282001, मो.9837362000

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

एक चिन्तन

ओह मैं अपनी भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेदज्ञान छोड़कर कहाँ-कहाँ भट्क कर अपने मानव जीवन को व्यर्थ गवां रहा हूँ। न जाने किसे-किसे ईश्वर मान बैठा तथा कथित धर्म गुरुओं ने मुझे भटका ही दिया। पहले तो मैंने मर्यादा पुरूषोत्तम जी राम व योगेश्वर श्री कृष्ण जी को अपने हृदय में सर्वोच्च स्थान देते हुए भगवान तक मान लिया पर अब तो न जाने कितने भगवान और गुरु हो गये और मैं भटकता-भटकता कभी साई बाबा का टी.वी. सीरियल देखे ऐसा घूमा कि साई बाबा को ही भगवान मान बैठा, कभी संतोषी माँ पिक्चर देख मेरी माँ-बहन उसे सब कुछ मान उसका व्रत पूजा करने लगी, गुरुओं के चक्कर में पड़ हमने अपने समाज में अनेक पंथ तैयार कर लिये। हिन्दु समाज खण्ड-खण्ड होने लगा है। मैंने कितनी देवियों के दर्शन को पता नहीं कितनी धर्म यात्राएं की पर मैं भूल गया इन देवियों ने तो शराब, भाग, तम्बाकू पीने वाले, माँस खाने वाले असुरों का नाश कर ही तो संसार में नाम ऊँचा किया था और मेरे में तो ऐसी अनेक असुर वृत्तियाँ हैं, मैं इन देवियों की कृपा का हकदार कैसे हो सकता हूँ। इन धामों की यात्रा, कावड़ यात्रा, जागरण, भण्डारे आदि से पहले मैंने अपने आचरण पर ध्यान देकर अपनी असुर वृत्तियों को छोड़ दिया होता मेरा कुछ तो उद्धार हो ही जाता।

परन्तु मेरा आचारण तो गिरता ही गया मैं विश्वगुरु भारत का वासी होकर भी अपनी सभ्यता संस्कृति से दूर होता जा रहा हूँ। मेरे वैज्ञानिकों ऋषियों ने वेद का मार्ग बताते हुए प्रतिदिन संध्या, हवन, योग का विधान किया था, इसी मार्ग पर राम और कृष्ण ने चलकर विश्व में सर्वोच्च स्थान पाया था पर मैंने गुलामी के काल को अपने में इतना समाया कि बच्चे के जन्मदिन के शुभावसर पर भी हवन के ज्योति जलाने के स्थान फूक मारकर दिया बुझाना आरम्भ कर दिया। मैं भूतप्रेतों के चक्कर में पड़ा, मैंने झूठी जाति व्यवस्था की दीवार बना समाज को विघटित किया और ऊँच-नीच का भेदभाव स्थापित किया। नारि जाति को वेद में पूजा (सत्कार) योग्य बताया 'यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।' हमने ताड़न अधिकारी (पीटने योग्य) कहकर नारी और शूद्र का पढ़ने-लिखने का अधिकार तक छीन लिया।

अब मैं क्या-क्या बताऊँ मेरे पतन की कहानी बहुत लम्बी है बहुत हो चुका! मेरा समाज इन भगवानों, गुरुओं के नाम बहुत खण्ड-खण्ड हो चुका, मेरा समाज प्रत्येक क्षेत्र में वेद ज्ञान को छोड़ गिरता ही जा रहा है। 'वेद' में तो एक ही ईश्वर का वर्णन है और स्पष्ट लिखा है कि ' न तस्य प्रतिमा अस्ति' उसकी प्रतिमा नहीं है। वेद में तो मनुष्य के आचरण अनुसार ही उसका वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शुद्र निर्धारित होता था यहां तो सब कुछ उल्टा हो गया अब एक मात्र रास्ता है सब छोड़-छाड़ कर केवल और केवल वेद के अनुसार आचरण करूँ। ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

सम्पादक जी के 60 वर्ष पूर्ण होने पर

शुभकामना

'अजय' नाम है आपका, कर्मयोग निष्काम।
घर बैंक समाज का, प्रतिदिन करते काम।।

माता-पिता की प्रेरणा, घर के शुभ संस्कार।
हवन सेवा सत्संग से, होता जीवन का उद्धार।।

साठ वर्ष का पवित्र जीवन, साठ वर्ष के काम महान।
साठ वर्ष का निरोग जीवन, साठ वर्ष का यह वरदान।।

बढ़ता जीवन चलता जीवन, जीवन है गतिमान।
हंसता जीवन गाता जीवन, जीवन की पहिचान।।

जन्मभूमि गुरुदेव की, टंकारा की शान।
आर्यजनों की भावना, शिवरात्रि का मान।।

घर समाज राष्ट्र का, कर सकूँ कुछ काम।
ईश कृपा प्रतिदिन रहें, जीवन हो सुखधाम।।

श्री रामनाथ सहगल के, हो सुपुत्र महान्।
पिता के पावन सपनों का, पूरा रखते ध्यान।।

डिफेंस कॉलोनी समाज का, बहुत बढ़ाया मान।
आर्यजनों की आशा का, पूर्ण हुआ अरमान।।

नई योजना नये विचार, नये नये प्रकल्प।
सबको सबसे जोड़कर, पूरण सब संकल्प।।

शुक्रवार सत्संग का, है सुन्दर अभिराम।
हवन और प्रवचन का, कितना हौते काम।।

आर्यजनों की आशा हो तुम, 'टंकारा' के संपादक हो तुम।
ऋषिवर के प्रिय भक्त् रहो तुम, ईशकृपा के पात्र रहो तुम।।

प्रस्तुति-आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा
जी.एच.-8/164, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110087, मो. 9871020844

वे मनुष्य धन्य है जो सत्य, निष्काम भाव से परमात्मा की उपासना करते हैं। न्याय से अर्थात ईमानदारी से कमाते है। सत्यवादी, सत्यमानी विद्वानों की संगति करते हैं। वे कभी भी दु:खों को नहीं भोगते हैं। - स्वामी दयानन्द

झूठ का मकड़जाल

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

आज के इस भौतिकवादी युग में भौतिक सुख सुविधाओं की लालसा इच्छा अपेक्षा और आकांक्षा में मनुष्य इस तथाकथित प्रगति के सोपान चढ़ने के लिए झूठ का शार्टकट मनुष्य के जीवन का कटशार्ट कर देता है। झूठ बोलने वाले व्यक्ति को हो सकता है कि ऐसा प्रतीत हो कि एक झूठ बोलने से उसे कुछ तात्कालिक लाभ या वह झूठ बोलकर किसी दंड से बच गया लेकिन झूठ बोलने के दूरगामी परिणाम उसके लिए सदैव बहुत हानिकारक होते हैं। एक झूठ को बोलकर उसे छिपाने के लिए हमें झूठ की अंतहीन सी कड़ी बुननी पड़ती है और झूठ बोलने वाला अंततः मकड़ी की तरह खुद अपने बुने हुए झूठ के मकड़जाल में फंस जाता है। झूठ बोलने के दुष्परिणामों पर यदि हम विचार कर लें तो शायद इस बुराई से बच सकें।

- ❏ झूठ बोलने वाले का कोई कभी विश्वास नहीं करता क्योंकि एक बार झूठ पकड़े जाने पर सामने वाला व्यक्ति सदा उसके कथन पर संशय ही करता है।
- ❏ झूठ बोलने वाला स्वयं भी कभी निश्चित नहीं रह सकता क्योंकि उसे सदा इस बात का भय लगा रहता है कि कहीं उसका झूठ पकड़ा ना जाये।
- ❏ झूठ बोलने वाला सदा तनाव ग्रस्त रहता है और झूठ पकड़े जाने पर क्रोध में आ जाता है। दोनों ही स्थितियां स्वयं उसके लिए हानिकारक होती है।
- ❏ झूठा व्यक्ति झूठ बोलकर अधर्म का आचरण करता है और अंत में ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में झूठ रूपी पापाचार के लिए दंड का भागी बनता है।
- ❏ झूठ की पोल खुलने के डर से झूठा व्यक्ति अपने से छोटे और कमजोर लोगों से भी डरता है और अक्सर लोग उसकी झूठ की कमजोरी के कारण ब्लैकमेल करते हैं।
- ❏ कष्ट के समय भी कोई झूठे व्यक्ति की सहायता नहीं करता क्योंकि उस समय भी लोग यही सोचते हैं कि झूठा उनकी सहायता या सहानुभूति पाने के लिए झूठ बोलकर कष्ट होने की नौटंकी कर रहा है।
- ❏ झूठ बोलने वाले की सत्य बात को भी लोग झूठ समझ लेते हैं।
- ❏ झूठ बोलकर उसे छिपाने का प्रयास करने पर उत्पन्न तनाव के कारण मनुष्य के शरीर में कई रासायनिक परिवर्तन होते हैं और उनके कारण उच्च रक्तचाप या बी.पी. मधुमेह, हृदय रोग आदि बीमारियां हो जाती है।
- ❏ झूठ पकड़े जाने पर लड़ाई झगड़े पैदा होते हैं और इससे पारिवारिक सामाजिक तनाव भी पैदा होता है। झूठ बोलना और झूठ बोलकर फायदा लेने की कोशिश करना अक्सर परिवारों में संबंधों के टूटने का कारण बनते हैं और अंततः यह परिवारों के टूटने का कारण बनता है।

अतः हम सभी को चाहिए कि झूठ का त्याग करके सत्य के व्रत को धारण करके जीवन में निर्भय और निश्चित होकर जीवन व्यतीत करें।

– 502, जी.एच. 27, सैक्टर-20, पंचकूला, मो. 09467608686

मनुष्यों परमात्मा मित्र के समान सब सुख देने वाला, संसार को उत्पन्न करने वाला और पालन करने वाला है। सत्य का उपदेश देने वाला है। सभी अच्छे बुरे कर्मों को देखने वाला, सर्व व्यापक अंतर्यामी और न्यायाधीश हैं इसलिए उस परमात्मा की उपासना करो। उसकी उपासना से ही सुख प्राप्त होगा।

– स्वामी दयानन्द

अपील

सभी आर्य बहनों से नम्र निवेदन कर रही हूं कि वह ऋषि भूमि टंकारा से अवश्य ही जुड़े, वहां पर होने वाले कार्यों को ध्यान से देखें। बड़े ही अच्छे अच्छे कार्य हो रहे हैं। उन कार्यों में अपना सहयोग देकर ऋषि ऋण उतारने की कोशिश करें और यह हम आर्य बहनों का कर्तव्य भी है। टंकारा हमारा तीर्थ स्थल है, वहां कार्यो की बहती गंगा है-गुरुकुल में बच्चों को पढ़ा सकते हैं, छोटे बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं-विशेषकर महिला सिलाई केन्द्र में सहयोग देकर बड़ा ही भला काम कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि वहां लगातार रहना होगा। वर्ष में दो तीन बार जाकर सेवा कर सकते हैं। जो बहन वहां जाने की इच्छा रखती हो, वह कृपया मेरे से सम्पर्क करें, तो मैं विस्तृत रूप से बताकर पूरा सहयोग दूंगी।

**– राज लूथरा, जी आई 976, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली-110023, मो. 9971206548**

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष **1000/-** रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

ભીખીબાઈ કાળકાભવાનીનો અવતાર

સ્વામી આનંદ (ગુજરાત) લિખિત ધરતીની આરતીમાથી સમ્પાદિત

ગુજરાતનમાં વિધવાના પુનર્વિવાહના સૂત્રધાર મૉનજી રુદરના જીવન ચરત્રિ પર નાટક ભજવાયું છે. ગુજરાતના આર્યોએ એમને ઓળખવા રહા. મલવાડા (ચિખલી)ના મુકુન્દજી કુંવરજીના સત્સંગે ઋષિભક્ત બન્યા અને ઇતિહાસમાં સ્વર્ણ અક્ષરે સ્થાન પામ્યા. -રમેશ મહેતા

મોનજી નાયક મૂળે શિવમાર્ગી; ને સનાતની રહેણીના. એટલે દીકરીઓ *અષ્ટવર્ષા* ને કાયદે પરણાવેલી. એવી એક અંબા પાંચમે પરણાવેલી ને સાત ઉંમરે દુખાણી. વરસ વહ્યા ને મોટી થઈ. વત્સલ પિતાથી દીકરીનું દુ:ખ દેખ્યું જાય નહિ.

એજ અરસામાં ઋશિ દયાનંદના અનુરાગી બન્યા. કથાભાગવત કાયમ રહ્યાં; પણ શિક્ષણ, સમાજ્સુધાર, સ્રી-સન્માન, વગેરેનો ઝોક સક્રિય બન્યો. ઘરમાં જરાતરા વાત કીધી ન કીધી, ને ચીખલીનો એક યોગ્ય નાતીલો જોઈને દીકરીને પરણાવી દીધી!

ગામ વકાસી રયું. અનાવલ ન્યાત બધી તળેઉપર. જોતજોતામાં નાતીલાઓ તમામનો રોશ હૂહૂકાર કરીને ભભૂકી ઊઠ્યો!

ન્યાત મળી. તેડાગર ગયો. આરોપીને નાતપંચ સમક્ષ ઊભો કરવામાં આવ્યો. પ્રમુખે ચાર્જસીટ સંભળાવ્યું. આરોપી મૌન!

તે કાળે ગામડાં હજુ ઓગણીસમી સદીની બહાર નીકળ્યાં નહોતાં. ત્યારની ઉજળિયાત કોમો એટલે પીંઢારા લૂંટારા બહારવટિયાની ધાકે ઘરમાં ઘર અને તેમાં ઘર કરી એકબીજાની કોટે બાઝીને ભોંયરે કોઢારે વસનારા, અને પોતાની પંચકોશી દસકોશીની પેલીમેરની દુનિયાને 'પરદેશ' ગણી આંખે અંધારી ચડાવીને જીવનારા ઘરઘુસિયા લોકોનાં સંગઠન. ન્યાતજાતોનાં પંચ એનોજ નમૂનો.

બપોર આખી મોનજી નાયકને માથે માછલાં ધોવાયાં. બહુ ભીંસે ત્યારે આરોપીનો જવાબ એક જ વાકય:

'મેં કર્યું તે સમજી વીચારીને કર્યું. પરમેશ્વરને માથે રાખીને કર્યું. ધર્મ ગણીને કર્યું. મને એનો પસ્તાવો નથી.'

સભામાં સોંપો પડી ગયો. પંચ ખાસિયાણું.

પછી ચાલી રનિંગ કૉમેન્ટરી:

'હાય, હાય! હડહડતો કળજુગ જ આવ્યો કે બીજું કાંય? આમ જુઓ તો પોથીપીરાયણ ભારતભાગવત. મોટો ધર્માત્મા. પણ એણેજ ઊઠીને નિયાતનું નાક કાપ્યું! અનાવિલની નિયાતને કોળી – દૂબળાની હરોળમાં મૂકી જો!'

ન્યાત પટેલે (પ્રમુખે) પંચ જોડે ઘડી વાર ગુસપુસ કરી પંચનો ફેંસલો સંભળાવ્યો:

'મોનજી નાયક નિયાતબહાર. એની જોડે જે કોઈ કશો વહેવાર કરે, બોલેચાલે, તેનો ૨૦૦ રૂ. દંડ'!

વળતી સવારથી જ અમલ ચાલુ થયો. સગુંવહાલું, નાતીલું સૌ ન્યાતના ફરમાન આગળ અલ્લાની ગાય.

ન્યાતની ખફગી નાગફણિયા થોરની જેમ તાબડતોબ વાગી. ઘરની પોરી પડોશી નાતીલાને ઘેર કશુંક કહેવા પૂછવા ગઈ:

'વજી! તારે ઘેર જતી રે. આંય નો આવતી. તારી જીને કે'જે ઇચ્છીનાં ઘરના ના કે'તા છે'!

જીને ચાટી ગઈ. મન કરે, પાધરી જ પેલા નિયાત પટેલિયાને ઘેર જાઉં, અને એની સાત પેઢી લગીના વહી વાંચી આવું.

પણ જીજાનું મોં જોયું ને ગમ ખાઈ ગઈ.

જરા વાર થી, ને નાતીલાવનું ટોળું આવ્યું :

'પોરીને બહાર આણો.'

'સાસરે ગઈ.'

'નાતરે ગઈ!'

'તિયાંથી લાવી મંગાવો. બાલ લેવડાવો.'

ટોળું મોનજી પર હુમલો કરવાને ઇરાદે આવેલું. પણ ભીખીબાઈ વાઘણની જેમ કૂદીને બહાર આવી. ધણીની આડે ઊભી રહી. ભાડેલાવને પડકાર્યા:

'કોણ મારી પોરીને લાવવા કે'તું છે? તું કિયાનો બાદશા હાકેમ ગવંડર આવેલો જોઉં, મારી પોરીની પંચાત કરવા વાળો? મારી પોરીની મુખત્યાર હું ને તીનો બાપ. તું કોણ થતો છે?'

ટોળું વધું કશું કર્યે વીખરાઈ ગયું.

'આ નાતીલાવ પૂઠે પઈડા છે, ને તમે કાં કાય ની બોલતા?'

'એમ ઊકળ્યે કેમ પાલવશે, વજીની જી?' આ તો હજુ પહેલી પૂણી છે. હજુ તો આ જ આંખે આભના તારા ભાળવા પડવાના છે. ગામ-ભાગોળે જ પગ થાકસે, તો પૂરો પંથ કે'ણી મે'તે કપાવાનો?

....

ભીખીબાઈના મોંઢેથી આપવીતી.............. (૧)

"..... પણ બહિષ્કાર ચાલુ રહ્યો ને વધુ આકરો થયો. ભાડેલાવ નિતનવા પેતરા ઊભા કરે, ને દુ:ખ દે. મારા બાપના પાનતંબાકુ બંધ કીધા. વાડ ભરાવીને કૂવે જવાનો મારો રસ્તો બંધ કરવા હુકમ કાઢ્યો. હું પાણી ભરવા જાઉં, તી જ વેળાએ તાંથી નીકળી, ને કાનોકાન હાંભળ્યું. મને જતી જોઈનેજ બોલેલો.

મેં તાં ચોકમાં દેગડું ઉતાઈરૂં, ને પૂછ્યૂં:

'અલા નિયાતના ડિંગલા! તારી બૈરી કિયા દુ:ખે મરી ગેયલી? તીનો જવાબ દે. અમારી ખેધે પડ્યો છે, પણ હું મરી જવા તો મારી પાછળ તો પરમેહર ઊભો છે, પન તારી પાછળ તો જમ ઊભો જો!'

ધરાર જઈને કૂવે દેગડું મૂકી આવી. "જોઉં કેની માયેં સેર સૂંઠ ખાધી કે મને અટકાવે?"

'કશામાં ની ફાઈવા તિયારે એક વાર મારવા આવ્યા. ડોસાને ભગંદરનો વિયાધિ. હું રોટલા ઘડું.

'નિયાતવાળા મારવા આવે છે. કાંય કરીસું?'

"આપણે કીધું તે પરમેહરને પૂછીને કીધું. હવે આ પાર કે તે પાર. ઓટલે જઈને બેહો, ભલે આવે."

આવ્યા. ડોસાએ જવાબો સારા આઈપા. હું ઓ ગઈ. મીં ક'યું

'મારી પોરીની ચૉવટ કરવા વાળા તમે કોણ થતાં છો?'

પછી આવેલા એકુએકની કુણેહ કાઢી દેખાડી. પેલાવ અકેક કરીને ઊઠી ગિયા!"

"ગુરુદેવ ટાગોર કે એવા જ કોઈ મનીશીએ કયાંક એવી મતલબનું લખ્યું છે કે માનવીની માનવતાની ગરિમા ઉપર જ્યારે ઉપરાઉપરી આઘાત થાય, એના જીવનનું હીરખમીર તમામ હૈયાબળ જ્યારે ખવાઈચવાઈ જવા કરે, એનો અંતરાત્મા ડઘાઈ કચડાઈ દુણાઈ ભૂંજાઈ જતો હોય, કુળકિનારા, આભધરતી બધું કાકાર થઈ ગયેલું ભળાય, ત્યારે આત્મતત્ત્વના ગંભીર ઊંડાણોમાં સૂતેલો માનવાત્મા ઉધડીકીને ઊઠે છે; અને પોતાનું તમામ બળ 'એકજોર' કરીને એના દેહ આત્માને ગ્રાસી જવા કરતી ઘોર વિપદ્ સામે મંડાય છે. એનું તમામ તેજ ઓજ અને ગૌરવ એકટીપે આવીને મરણિયો મોરચો લડી કાઢવા ધસે છે. અને અંતે શત્રુદળને જેર કરી, તમામ વિપદ્‌ની સાડસતીને પગતળે છૂંદી મહામહિમામય એવો માનવ છ ફૂટ ઊંચો ઊભો રહે છે!

આવા મહામાનવ તરીકે જનમવાની ઝંખના દેવો પણ સદા સેવતા હોય છે એવું શાસ્ત્રપુરાણોયે ગાયું.

વહેલી સવારે ઊઠીને ભીખીબાઈએ ઝટપટ ઘરકામ, વાસીદાંવલોણા, છાણગોઠાથી પરવારી લીધું. છોકરાઓને પેજ પિવડાવી ન્યાહરી કરાવી નિશાલે ભેજી દઈ જાણે કશું પ્રયોજન ઉદ્ભવ્યું હોય તેમ તૈયાર થઈ ગયાં. સવારનો પહોર. છાપરાં આંગણાં ઓટલાઓ પર ગામમાં બધે શિયાળાના સૂરજનું કુમળું તડકું આવી ચૂકયું હતું. ઊઠી દાતણપાણી કરવા ઓટલે બેઠેલા ઘરડેરાઓને રસ્તે જતું આવતું લોક 'છો ભલા, છૈયે ભલા' કરતું હતું.

ભીખીબાઈએ બારણા બહાર આવીને આડોશીપાડોશી સૌ સાંભળે તેમ મોટેથી કહ્યું :

'આણીગમ બહાર આવો તો ઓટલા પર, વજીના જીજા! આ નાવી આવેલો છે. હજામત કરાવી લેવ.'

પાડોશીઓએ કાન માંડ્યા.ઓટલે બેઠા દાતણ કરવાવાળાઓએ આંખો વકાસી જોવા માંડ્યું. 'મોનજીની હજામત કરવા નાવી આઈવો સું? દેખાતો કાં ની મલે? બારણે તો ભીખી એખલી ઊભેલી છે. કેથે ઊભો રાઈખો ઓહે.'

મૉનજી નાયક બહાર આવ્યા.

'કાંય કેતી છે?'

'નાવી કિયા છે? તેં કે'યુ નાવી આવેલો જે?'

'હું પોત્તે કેવી ઊભેલી છેંવ જે. હું જાત્તે તમારી દાઢી બોડા.'

'કેવી વાત કરતી છે?'

'ખાસ્સી. લાખ રૂપિયાની. સુનામહોર જેવી!'

'કાંય લાજ્સરમ?'

'લાજ્સરમ નાતીલાવને. ભાંઠલા ફાટ્ટીમુવાવને. મને કાંયની સરમ?' નિયાતજાત ગામ-પરગામનાં પાંચહે મનેખ વચ્ચે ઢોલત્રાંસા વગડાવીને મારા બાપે હાથ પકડાવ્યો છે. મારા પોત્તીકા માંટીની દાઢી બોડવામાં મને કાંયની સરમ? કોય વાતે ઘરમાં ની જવા દઉં. આંય ઓટલે બેહાડીને જ તમારી દાઢી બોડા. આ બધું તિયાર રાખેલું જે. બેહો.'

હાથ પકડી જોરથી બેસાડ્યા. ને સાબુપાણી લઈ દાઢી ભીંજ્વવા માંડી. ચોળતી જાય ને મોઢેથી વાગ્બાણો વરસાવતી જાય. એના હૈયામાં આજે ધગધગતો સીસારસ રેડાયો હતો!

'મૂઆ લખ્ખોદિયા નાતીલાવ ખેધે પડેલા છે. બધા ગામ પર સિરજોરી ચલાવી રિયા છે. નાવી, દૂબળા, માંગેલા, ગામ બધાને આંતરી મેલેલું. મોંકાણિયાવે દુ:ખનાં ઝાડ ઉગાઈડાં. જાણે આવહે ભીખલી ને તિનો મરદ બેવ નાક ઘહતાં. વાટ જાયોં કરજો, મોંબળ્યાવ. ભીખલી રે'હે ઊંચે માથે ગામ વચ્ચે તમું સઉવેનાં નાક પર ટીચીને.'

(જતાઆવતાં ગામલોકને) 'જાવ જઈને કે'વ પેલા નાત પટેલિયા લખ્ખોદિયાને. ફાટ્ટીમૂવો, જીવતાંનો જાનૈયો ને મૂવાંનો ખાધિયો, હમ્મેસનો. તિને જઈને કો'કે ભીખલી એનાં માંટી-પોયરાવને લઈને તારી છાતી પર રે'હે રે'બે ને રે'હે. મૂઆ નિયાત આખીને કઠોડે ચડાવતો છે. "પોરીના બાલ લેવડાવો" એમ તેં જ ને નિયાતને કે'યલું? કે બીજા કોયેં? મારી પોરીની હું મુખત્યાર. ફાવે તિયાં દઉં. તીમાં તું કોણ થતો છે વચમાં આવનારો, ને હુકમ દેનારો?

'કાંયે નૉ ચાઈલું તિયારે કે', "તિના ઘરનો નાવી બંધ કરાવું. ગામના નાાવીને દમ દેઈને બંધ કરાઈવો. કાંય મને તો બંધ કરાવવાની છાતી ની મલે ને? " તીને કે'યેં આાવ હવે, મારા માંટીની દાઢી બોડતી મને બંધ કરવા! ભાઠલા ફાટ્ટીમૂઆ બધા તિની હામાં હા ભણીને અમારી પૂંઠે પઈડા છે!'

વળી કહે : 'મારા માંટીની કાંય? – આજે આંય ઓટલે બેહીને ભાઠલાવની નિયાત બધીની જિત બોડતી છેંવ! આવો, અટકાવો મને, જિની છાતી હોય તે!'

પડોશનું લોક સૌ ડઘાઈ ગયું. ઓટલે બેઠેલા મરદ મુછાળા ઘરમાં ભરાઈ ગયા! રસ્તે જતુંઆવતું લોક અટકીને લગાર તાકી રહે, ને પછી ચાલ્યું જાય. ગામ બધામાં કળાહોળ :

'ભીખીબાઈ મૉનજીને ઑટલે બેહાડીને તિની દાઢી બોડતી છે! કાળકાભવાનીનો અવતાર છે જો! તિણે ગામના ભાઠલાવ બધાંનું નાક ચાર આંગળ ભરીને કાપી લીધું!'

गौ–दान : महा–दान

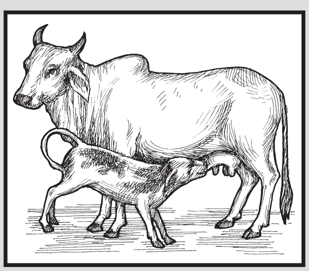

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन– प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/–** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा
49वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

17 जुलाई 2015 को महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा का 49वां स्थापना दिवस समारोह टंकारा परिसर में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम प्रातः यज्ञशाला में यज्ञ का शुभारम्भ हुआ जिसमें स्थानीय सांसद एवम् भारत सरकार के कृषि एवं ग्रामीण विकास राज्य मन्त्री श्री मोहनभाई कुंडरिया, स्थानीय विधायक श्री बावनजी भाई मेतलिया एवम् मोरबी जिला पंचायत के प्रधान श्री केशुभाई रैयाणी मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित थे। श्री मोहनभाई कुंडरिया जी ने यजब्रह्मा आचार्य रामदेव जी का वर्ण किया। तदोपरान्त मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर केन्द्रीय राजमन्त्री श्री मोहन भाई जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मैं टंकारा ट्रस्ट द्वारा स्थापित महर्षि दयानन्द विविध लक्ष्यीये स्कूल से ही शिक्षा ग्रहण की है और निरंतर अपने बाल्य काल से ही ऋषि जन्म भूमि के परिसर में आता जाता रहा हूं। अपने वर्तमान दायित्व के निर्वाह हेतु पूरे देश में जाना होता है और हर जगह आर्य समाज के धार्मिक क्षेत्र और सामाजिक क्षेत्र में किये गये कार्यो को नजदीक से देखने और समझने का सौभाग्य प्राप्त होता है। आर्य समाज देश और समाज की सामाजिक उन्नति के लिए जो कार्य कर रहा है वह प्रशंसनीय है। अभी कुछ दिन पूर्व मुझे नैरोबी (केन्या, पर्वी अफ्रीका) के आर्य समाज के रविवारीय सत्संग सत्र में जाने का शुभअवसर प्राप्त हुआ। विशाल सत्संग हॉल में बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन था जिसमें सैकड़ों लोग उपस्थित थे। वहां मुझे जब बोलना का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने यह सूचना वहां दी कि मैं टंकारा गांव में टंकारा ट्रस्ट द्वारा स्थापित विद्यालय से पढ़ा हूं और वहीं से विधायक और सांसद बना। मेरे यह कहते लोगों में उत्साह की एक लहर दौड़ गई और सभी ने जयघोष करते हुए मेरा उत्साह बढ़ाया। वहां जाकर मुझे यह अनुभव हुआ कि मेरा कितना सौभाग्य है कि मैं इस जन्मभूमि से जुड़ा हुआ हूं। तत्पश्चात आपने सभी उपस्थित ब्रह्मचारियों को शुभकामनाएं देते हुए उसके भावी भविष्य में उन्नति और प्रगति के भाव से अपनी अभिव्यक्ति को समाप्त किया।

इस अवसर पर टंकारा ट्रस्ट के स्थानी ट्रस्ट श्री हंसमुख भाई परमार भी उपस्थित थे। साथ ही श्री रमेश मेहता जी एवम् मौरबी एवम् उसके आसपास के जिलों से आर्य जनता भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ, भजन एवम् प्रवचन का कार्यक्रम रहा।

निःशुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर

दिनांक 12 जुलाई 2015, रविवार को प्रातः 9:30 बजे से 12:00 बजे तक आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में जनसहयोग से 68वां निःशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में लगाया गया।

विद्वान/प्रचारक/पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज सान्ताक्रुज को अपनी धार्मिक गतिविपधियों के विस्तार हेतु सद् गृहस्थ, विद्वान/प्रचारक/पुरोहित की आवश्यकता है। वेद प्रचार के पुनीत कार्य में अपनी सेवाएं देने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें। मिशनरी भावना के महानुभाओं को प्राथमिकता दी जायेगी। -महामन्त्री, आर्य समाज सान्ताक्रुज, लिंकिग रोड, सान्ताक्रुज (वेस्ट), मुम्बई-400054

आर्य विद्वानों की प्रचार यात्रा टंकारा में

दिनांक 5 जुलाई 2015 को प्रातः परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान एवम् वरिष्ठ इतिहासकार प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु एवम् सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी के नेर्त्तत्व में 35 व्यक्ति जिसमें सन्यासी वृन्द, वानप्रस्थी एवम् भजनोपदेशक उपस्थित हुए।

ट्रस्ट की ओर प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक-एक कमरा विश्राम के लिए उपलब्ध कराया। तदोपरान्त अपराह्न भोजन इत्यादि से निवृत्त हो यज्ञशाला में सम्मान एवम् प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें आए हुए सभी सम्माननीय विद्वानों को टंकारा स्मृति के रूप में विशेष रूप से निर्मित टंकारा प्रसाद के थैले एवम् टंकारा इतिहास की पुस्तिका सप्रेम भेंट स्वरूप दी गई। इसी के साथ उनको केसररिया पट् ओढ़ाकर सम्मान किया गया। इसी अवसर पर डॉ. धर्मवीर एवम् प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने अपनी ऐतिहासिक गुजरात प्रचार यात्रा के मन्तव्यों से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराया। इसी अवसर पर पंडित भूपेन्द्र जी जो कि इस प्रचार यात्रा के साथ ही चल रहे हैं कि भजनोपदेशक उपदेश भी हुए। डॉ. धर्मवीर जी ने ऋषि को संसार की देन पर सारगर्भित प्रेरणास्पद प्रवचन दिया। केरल के आए ऋषि भक्त ने केरल में ऋषि मिशन को बढ़ाए जाने के लिए किए जा रहे कार्यो का परिचय दिया। इसी अवसर पर श्री सुरेश जी द्वारा लिखित एवम् सम्पादित पुस्तिकाओं का विमोचन किया गया। प्रो. जिज्ञासु जी ने आर्य समाज के यशस्वी जनों के इतिहास का स्मरण कर ऋषि मिशन को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी।

इस अवसर श्री हंसमुख भाई परमार, ट्रस्टी ने सबका स्वागत किया और इस बात की चर्चा की कि कुछ दिन पूर्व अगर आपके आने की सूचना प्राप्त हो जाती तो इससे भी अधिक संख्या में लोग आप जैसे विद्वानों के सुविचारों से लाभान्वित हो सकते थे। अन्त में श्री रामदेव जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। रात्रि भोजन उपरान्त यात्रा गांधीधाम कच्छ के लिए प्रस्थान कर गई।

महात्मा चैतन्यमुनि जी सम्मानित

हिमाचल प्रदेश सोलन में डी.ए.वी. प्रबन्धक समिति द्वारा आयोजित भव्य समारोह में अन्य विद्वानों के साथ-साथ मां सत्यप्रियायतिजी एवं महात्मा चैतन्यमुनि जी को भी सम्मानित किया गया। यह सम्मेलन पूज्य महात्मा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ तथा मुख्य अतिथि समिति के अध्यक्ष श्री पूनमसूरी जी थे। देश भर से आए हजारों डी.ए.वी. संस्थान से जुड़े व्यक्तियों ने समारोह को सार्थकता एवं भव्यता प्रदान की। उल्लेखनीय है कि पूज्य माताजी तथा महात्मा जी ने सन् 1996-97 से लेकर आज तक डी.ए.वी. के कॉलेजों तथा स्कूलों में सैकड़ों ही सार्थक चरित्र निर्माण एवं वैदिक चेतना शिविर संचालित किए है।

आर्यन अभिनन्दन समारोह

सभी आर्य सन्यासी, विद्वान, महोपदेश, उपदेशक, भजनोपदेशक, ढोलक वादक जिनकी आयु 60 वर्ष या उससे अधिक है, हम उन सबका अभिनन्दन करेंगे। योग्य पात्र सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपना परिचय निम्न पते पर भेजें। **नोटः** केवल वे ही सज्जन लिखें जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिए लगाया है। कहीं अध्यापक या अन्य कोई नौकरी या कार्य नहीं किया हो। **समारोह का विवरणः** अध्यक्षता-स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्थान-गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली, समयः प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक, शनिवार दिनांकः 19 सितम्बर, 2015

ठाकुर विक्रम सिंह, ए-41, द्वितीय तल, लाजपत नगर पार्ट-2, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110024, फोन-011-45791152/011-29842527

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
दिल्ली में राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर श्री सत्यानन्द जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री अशोक चौहान, संस्थापक अध्यक्ष ऐमिटी विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान, चेयरमैन ए.के.सी. ग्रुप ने कहा कि ये शिविर ही बालिकाओं में आत्मविश्वास, सुसंस्कार व आत्मनिर्भर बना सकते हैं। समारोह ध्वजारोहण से प्रारम्भ हुआ तथा व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम, लाठी, भाला, छुरी, डम्बल, लेजियम तथा तलवार आदि के प्रदर्शन ने सभी को रोमांचित कर दिया। वीरांगनाओं द्वारा हाथ से, सिर से तथा किक द्वारा टाईल्स तोड़ने का प्रदर्शन उत्साहवर्धक रहा। मंच संचालन श्रीमती आरती खुराना ने किया। श्रीमती अभिलाषा आर्य, श्री सत्यम आर्य, श्री सचिन आर्य ने वीरांगनाओं को प्रशिक्षित किया। शिविर में दिल्ली संस्कृत अकादमी की ओर से वीरांगनाओं को दस दिनों तक संस्कृत सम्भाषण का कोर्स कराया गया। 20 शिक्षिकाओं को अलग से 'शिक्षिका पाठ्यक्रम' के द्वारा शिक्षिका सम्मान प्रदान किया गया। सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका का सम्मान कु. रिंकल गुप्ता को प्राप्त हुआ। शिविर में अलग-अलग प्रान्तों से लगभग 150 वीरांगनाओं ने भाग लिया। शिविर में उपस्थित गणमान्य व्यक्ति सर्वश्री अशोक चौहान, आनन्द चौहान, अजय चौहान, सत्यानन्द आर्य, राजीव आर्य, मदन मोहन सलूजा जी, राज कुमार, शिव कुमार मदान जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री विनय आर्य, ब्र. सुमेधा जी, शारदाजी, शीला ग्रोवर जी, प्रधनाचार्य, श्रीमती अंजलि कोहली आदि ने मंच की शोभा बढ़ाई। सभी कार्यकारिणी बहनों में मृदुला चौहान, विमला मलिक, सत्या चुघ, कमला आर्य, रूपवती देवड़ा जोधपुर, प्रकाश कथरिया, मालतीजी आदि के अथक परिश्रम करके शिविर को सफल बनाया। शिविर के अन्त में सार्वदेशिक आर्य वीरांगनादल की प्रधान संचालित साध्वी डॉ. उत्तमा यदि ने सभी का धन्यवाद किया तथा अगला शिविर मध्य प्रदेश में आयोजित होगा यह घोषणा की।

(पृष्ठ 1 का शेष)

की इजाजत देते है इससे साबित होता है कि वे कितने देश भक्त हैं। ऐसी ही बातें है कि अंग्रेज आज इतने उन्नत हैं और तुम हो कि अपने देश की बनी वस्तुओं को छोड़ विदेशी के पीछे दीवाने हो।'' और दयानन्द पहला भारतीय था जिसने कहा भारत का भविष्य केवल और केवल एक ही बात पर आधारित है और वह है स्वराज्य अपने देश में अपना राज्य। विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो अपने राज्य से अच्छा नहीं हो सकता। दयानन्द ने अपने अनुयाईयो को कहा कि हर सुबह इस प्रार्थना से शुरु करें। ''हे सर्वशक्तिमान प्रभु हमको साहस दो, हिम्मत दो, ऐसा ऊँचा चरित्र दो कि हम अपने देश को आजाद करा सकें ओर अपने ही राज्य में सुख रहें कोई भी विदेशी हम पर राज न करे'' कहने का तात्पर्य यह है कि दयानन्द ने अपने अनुयाईयो के मन में देशभक्ति और राष्ट्रीयता के बीज आरोपित कर दिये और इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि दयानन्द की मृत्यु के बाद भी कितने ही आर्य समाजी देश की आजादी के लिए जेलों में गए और बलिदान हुए।

उस समय के पंजाब के.ले. गर्वनर Sh. Denzil Ibbeston ने लिखा "I have been told by nearly every District Magistrate of Punjab that where there was Arya Samaj it wads the center of sedition talk" इसके बाद Ibbetson के उत्तराधिकारी Sh. Michael D Dwgev ने कहा While Arya Samaj does not include more than 5% of Hindu Population of Punjab, an enormous number of Hindu convicted of Sedition and other political offences from 1907 down to present day are members of Arya Samaj यह सबूत है कि आजादी की लड़ाई के आन्दोलन में आर्य समाजी अग्रणी रहे। ब्रिटिश पत्रकार Valentine Chirol ने काफी हद तक ठीक कहा था।

''दयानन्द की शिक्षाओं का कार्य हिन्दू धर्म को सुधारने का कम और देशवासियों को अंग्रेजो के खिलाफ खड़ा करने को अधिक था'' यहाँ तक ऐसे विषयों को जिनसे राजनीति में कोई सम्बन्ध नहीं था इसमें असली मकसद अंग्रेजी राज के खिलाफ घृणा उत्पन्न करना था। सत्यार्थ प्रकाश के दशम सम्मुलास में दयानन्द लिखते है जब इस देश में आर्यो का अपना राज था तो गौ हत्या वर्जित थी किसी भी पशु का वध नहीं किया जाता था, जबसे मांसाहारी विदेशी इस देश में आए है उन्होंने गऊमाता की हत्या शुरु कर दी और मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए भी देशवासियों को विदेशी शक्तियों के खिलाफ उभारा। वे लिखते है मूर्ति पूजा ने इस देश का जितना नुकसान किया उतना किसी और वस्तु ने नही। हम शत्रुओं के हराने के लिए मूर्तियों पर विश्वास करने लगे न कि अपनी शक्ति और अपने अस्त्र-शस्त्रों पर। देखो सोमनाथ मन्दिर का टनों सोना वे लूट कर ले गए और हम खड़े देखते रहे।

भारत के विभिन्न पन्थों और सम्प्रदायों को इकट्ठा करने का भी उनका एक ही मकसद था कि वैदिक धर्म के झण्डे के तले सारा देश एक जुट हो और विदेशी ताकतों के खिलाफ लड़े और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दयानन्द ने दिल्ली में 1877 में (दिल्ली दरबार के मौके पर) सभी धर्मो के प्रतिनिधियों की एक सभा बुलाई इसमें केशव चन्द्र सेन, सर सईद अहमद खां और मुन्शी अलखारी आए थे यद्यपि वे इस सभा में कोई कार्यन्वित नतीजा नहीं निकला, परन्तु बाद की सर्वधर्म सभाओं का आधार अवश्य बनी। संक्षेप में कहें तो दयानन्द मनुष्यों के सार्वभौमिक भ्रातृत्व के पक्षधर थे और वास्तव में दयानन्द ने इस देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को लोगों के सामने बड़ी सफलता पूर्वक रखा और उनसे निजात पाने के लिए जो सुझाव दिये उनके बाद के समय में उनसे वास्तविक लाभ भी हुआ।

- स्वामी दयानन्द मार्ग, अम्बाला शहर।

(पृष्ठ 6 का शेष)

महाभारत में उपलब्ध होते हैं। श्री कृष्ण के प्रत्येक कार्य में निर्भीकता और आत्म सम्मान का भाव सदैव बना रहता था। दुर्योधन के भोज प्रस्ताव पर वे कितनी निर्भीकता से कहते हैं-राजन किसी के घर का भोजन अन्न दो कारणों से खाया जाता है या तो प्रेम के कारण या आपत्ति पड़ने पर। प्रीति तो तुम में नहीं है और संकट में हम नहीं है। श्री कृष्ण जी के जीवन में निर्लोभता थी। जितनी राज्यक्रान्तिया करायी परन्तु किसी लोभ लालच से नहीं। महाभारत का यह महान सूत्रधार धरती के एक टुकड़े का भी शासक नहीं है। श्रीकृष्ण मानवो चित गुणों, प्रेम, नम्रता, सहिष्णुता, आदर्श मैत्री भाव एवं शालीनता के साकार स्वरूप थे। वे व्यास, धृतराष्ट्र कुन्ती और युधिष्ठिर आदि बड़ों से मिलते थे तो सदा अमरत्व का प्रसाद है! न केवल भारत ही, प्रत्युत संसार भर के लिए यह श्रीकृष्ण की सबसे बड़ी देन है। यही उनका महासंदेश है। उनके द्वारा प्रस्तुत राजनीतिक क्रान्ति का मन्त्र तो केवल उनके ही युग विशेष के लिए इस देश के आंगन को कंटक रहित कर पाया था। बाद में पुनः शिशुपाल दुर्योधन, जरासन्धों की इस देश में मानो बाढ़ सी आ गई। किन्तु गीता के रूप में जो महाप्रसाद योगेश्वर श्री कृष्ण ने हमें दिया, उससे तो युग युग के लिए वह हमें निहाल कर गये हैं। जिस उच्च प्रयोजन से उपनिषदकारों ने अनेकानेक तत्वविवेचनात्मक आख्यान रचे, वाल्मीकि ने रामायण जैसे महाकाव्य की सृष्टि की और व्यास ने महाभारत जैसे विराट ग्रन्थराह का आयोजन किया, उसे भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में आमने सामने युद्ध के लिए उद्यत दो सेनाओं के बीच खड़े होकर, अर्जुन को दिये गये अपने इस महोपदेश द्वारा, सूत्ररूप में सबसे अधिक सफलता पूर्वक सिद्ध कर दिखाया। तभी तो वह योगेश्वर पुरुषोत्तम और जगद्गुरु कहलाए।

कैसा अद्भुत और अलौकिक जीवन था उनका। कैसा रहस्यमय दिव्य चरित्र यह था।

श्रीकृष्ण मानवता के पुंजारी है, युगपुरुष है, क्रान्ति दूत है और है महाभारत के महान निर्माता। उनके जीवन के सभी प्रसंगो में मानवता की यह छाप उनके चरण छूते थे। नीतिमत्ता के सागर थे। सदाचार एवं नैतिकता उनके जीवन में कूट कूट कर भरी हुई थी। यह गीता तत्व और उसकी मूल भावना गीता का यह उपदेश श्रीकृष्ण के जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है। न केवल भारत ही प्रत्युत संसार भर के लिए यह भी कृष्ण की सबसे बड़ी देन है। यही उनका महासंदेश है।

- असो. प्रोफेसर खालसा कॉलेज (देवनगर नई दिल्ली), मो. 9999426474

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 17 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है। आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भेजने की कृपा करें ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

(पृष्ठ 2 का शेष)

आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को रेखांकित करते हुए स्वस्थ जीवन जीने की कला पर बहुत ही प्रभावशाली प्रवचन तो दिया ही, साथ ही सभा में उपस्थित प्राचार्यों और अध्यापकों की अनेक शंकाओं का समाधान किया। अजमेर से आए हुए वैदिक विद्वान आचार्य सोमदेवजी ने ईश्वर के स्वरूप और उसकी सर्वव्यापकता को वैदिक प्रमाणों द्वारा सिद्ध करते हुए उसके न्यायकारी, दयालु होने की चर्चा की। इस विषय पर सर्वाधिक प्रश्न और जिज्ञासाएं उठीं जिनका समाधान योग्य प्रवक्ता ने बहुत ही सफलतापूर्वक किया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त विद्वान् डॉ. वागीश आचार्य ने जीव और जगत् की वास्तविकता पर प्रकाश डालते हुए जीवन में आने वाली समस्याओं और उनके समाधान करने के तरीके बताए और शिक्षकों के जीवन में मानों एक नया अध्याय जोड़ दिया। यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप को डॉ.वागीश ने इस प्रकार से स्पष्ट किया जिसे हर संप्रदाय से संबंध रखने वाले अध्यापकों ने एक स्वर से स्वीकार किया। किसी भी संगठनात्मक कार्य को यज्ञ बताते हुए उन्होंने अपने कार्य को यज्ञमय बना देने में ही व्यक्ति और समाज का कल्याण बताया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने 'शिक्षा' में नैतिक-मूल्यों की आवश्यकता' पर बहुत ही मनोरंजक व्याख्यान देते हुए अध्यापकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि शिक्षा केवल अक्षर-ज्ञान नहीं, बल्कि मानव निर्माण की एक कला है। कार्यशाला को सार्थक बनाने हेतु प्रत्येक सत्र के बाद शंका, समाधान का प्रावधान रखा गया था जिसका सभी उपस्थित अध्यापकों ने भरपूर लाभ उठाया और अपने हृदय कि उन-उन विषयों से संबंधित शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। आयोजन की समाप्ति पर कार्यशाला के विषय में अपने विचार रखते हुए लिखित प्रपत्रों के माध्यम से 120 अध्यापकों ने राष्ट्र और समाज की सेवा में समर्पित होने का संकल्प लिया और कहा कि शिक्षा के अतिरिक्त वे किसी भी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्य समाज से संबंधित कार्य को करने के लिए तैयार रहेंगे। इस कार्यशाला में हरियाणा के सभी क्षेत्रीय निदेशक, संबंधित बारह विद्यालयों के प्राचार्य उपस्थित रहे। दोनों दिन कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ होता रहा और दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार के आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी के ब्रह्मत्व में अध्यापकों ने यज्ञ तो किया ही, साथ ही यज्ञ करने की विभिन्न क्रियाओं से संबंधित अर्थो को भी समझा। कार्यशाला अपने उद्देश्य को हासिल करने में हर प्रकार से सफल हुई।

RETIREMENT IS A JOURNEY NOT A DESTINATION

टंकारा समाचार अगस्त, 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-08-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.07.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय